KASHYAP SAMACHAR

कश्यप समाचार

KASHMIRI PANDIT SABHA

JAMMU

The following programmes are being organized during Navratra days at Kashmiri Pandit Sabha, Ambphalla. All members of the Kashmiri Pandit community are invited to participate in these programmes for the peace and prosperity during the New Year :—

APRIL 1, 1995
(Saturday) Navreh Samaroh, From 3 p.m. to 5 p.m. Discourses by intellectuals and scholars and Bhajans by renowned singers.

APRIL 3, 1995
(Monday) Zang Treyi (for ladies only). 3 p.m. to 5 p.m.

APRIL 7, 1995
(Friday) Mahayagya commences at 10 a.m.

APRIL 8, 1995
(Saturday) Poorna Ahooti at 12-00 noon followed by distribution of Prasad (Bhojan).

Ram Navami procession starts at 3 p.m. from K.P. Sabha and proceeds to Raghunath Mandir Via Shiv Mandir.

कश्यप समाचार

(कश्मीरी पंडित सभा, जम्मू की मुख्य पत्रिका)

वर्ष : 6 सं० : 2 फरवरी 1995

हिंदी भाग

कश्मीरी भाग

मूल्य : रु० 10/- वार्षिक : रु० 80/ अमरीकी $ 30/ (विदेश में) (रोहिणी प्रिंटर्स कोट किशन चंद, जालंधर)

From The President's Desk

(अध्यक्ष की ओर से)

My dear brothers and sisters,

Namaskar, Peace, Prosperity and long life.

The pathetic attitude of the administration towards problems of migrant students deserves condemnation. The migrants students have been time and again clamouring for delinking the examination from Kashmir division, for the simple reason that the conduct of the examinations and the announcement of the results thereof takes years. These examinations should be conducted on the pattern of summer and winter zone of J&K Board of Secondary Education. Their demands for carry on system which has been agreed upon by Commissioner-cum-Secretary, Higher Education Department who happened to be the Vice Chancellor of Kashmir University at the time of admission of students in migrant colleges should be honoured. The whole approach of the authorities towards the displaced students smacks of disinterestedness and discrimination. The authorities have driven the students to the wall. They are forcing the peace loving students to come on the roads for getting their demands conceded. The K.P. Sabha has sent a memorandum to H.E. the Governor of J&K (who happens to be the Chancellor of Kashmir University) for immediate action particulary delinking from Kashmir University. I sincerely hope that good sense shall prevail upon the administration and an awkward situation which may arise from continued neglect of these problems, be avoided. We do not want our students to come on the roads. Their time is very precious which they would like to spend no learning and studying alone.

TRILOKI NATH KHOSA

संपादकीय

हमारा/री पहचान पत्र/त्रिका ?

आजकल देश में पहचान पत्र एक बड़ा विवादपूर्ण मुद्दा बना हुआ है। निर्वाचन आयोग (वस्तुत: निर्वाचन आयुक्त श्री शेषन) ने किसी भी राज्य या केन्द्रशासित क्षेत्र में चुनाव कराने की पहली शर्त यह रखी है कि राज्य मतदाताओं को पहचान पत्र दे दे। कई राज्यों ने बहुत हद तक यह शर्त पूरी की है और शेषन से खार खाए बैठे कई मंत्री-मुख्यमन्त्रियों ने बहाने बाज़ी करके इस शर्त की पूर्ति को टाला है। उधर शेषन देश की चुनाव-प्रक्रिया को शुद्ध करने पर तुले हुए हैं। वे खुलकर बता चुके हैं कि चुनावों से ही देश की भ्रष्ट व्यवस्था की शुरुआत होती है इसलिए सुधार भी यहीं से शुरू होने चाहिएं। पहचान पत्र मतदाता को इस व्यवस्था की भ्रष्टता से लड़ने के शस्त्र के रूप में भी इस्तेमाल हो, यह भी उनकी योजना का अंग है। इसी सिलसिले में उन्होंने यह भी कहा कि जम्मू कश्मीर में चुनाव तभी होंगे जब कश्मीरी विस्थापित इसमें भाग ले सकें। राज्य के मतदाताओं को भी शीघ्र उनके पहचान-पत्र दिए जाने की आज्ञा जारी होने की संभावना है।

चुनाव के प्रसंग में व्यक्ति की पहचान का मापक होगा पहचान पत्र। पर चुनाव केवल एक राजनीतिक अनुष्ठान है, जबकि व्यक्ति राजनीति के अतिरिक्त मन, मस्तिष्क, संस्कृति, भाषा, इतिहास, देश आदि से भी पहचाना जाता है। कश्मीरी पंडित को जब उसका राजनीतिक पहचान-पत्र दिया जाएगा तो निस्संदेह इससे उसके राजनीतिक अधिकार को मान्यता मिलेगी। पर उसको उसका सांस्कृतिक पहचान-पत्र कौन देगा ? जवाब है कोई अन्य नहीं, बल्कि वह स्वयं। राजनीति सामूहिक अभिप्रेरित प्रयत्न से बनती है जबकि संस्कृति वस्तुत: व्यक्ति के निजी (अनन्य, जो अन्य नहीं) प्रयास से अपने ही अतीत, अपनी ही परंपरा, अपनी ही प्रवृत्तियों (एटीट्यूड्स) से हासिल की जाती है। यह प्रयास अभिप्रेरित नहीं हो सकता अर्थात् इसे 'मोटिवेट' होके पाया नहीं जा सकता, बल्कि इसे अपने ही रक्त और मज्जा में पहचान कर स्थापित किया जाता है। हां जब यह सांस्कृतिक पहचान खो जाने का डर हो, तो जरूर अभिप्रेरित होकर और सामूहिक प्रयासों से इसे बचाए रखना पड़ता है। क्या कश्मीरी पंडित जाति की सांस्कृतिक पहचान मिट जाने की स्थिति नहीं आ गई है ? जरा सोचें। क्या हमें अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए नहीं रखनी चाहिए ? इसके लिए हम क्या करें ? यह पहचान-पत्र हम किस से कैसे लें ? क्या आपकी सोच के फैलाव में प्रस्तुत पत्रिका कहीं बैठती है ? आप समझते हैं कि 'कश्यप समाचार' हमारी पहचान पत्रिका हो सकती है ?

☐ सोमनाथ धर

कल्हण की "राजतरंगिणी" से शिक्षा

एक बात जिसे हम बार-बार दुहरा सकते हैं वह यह है कि सम्पूर्ण भारतीय इतिहास के दृष्टिकोण से कल्हण की राजतरंगिणी महत्त्वहीन नहीं है। भारतीस इतिहास का अधिकांश भाग राज्यों के इतिहास से बना हुआ है। चूंकि किसी दूसरे प्रांतीय इतिहास के अत्यल्प विवरण ही उपलब्ध हैं, अतः कल्हण का इतिहास, इन राज्यों में से एक का विशद् विवरण होने के कारण, शेष राज्यों के लिए एक नमूना बन जाता है।

कल्हण के अनुसार, इतिहास कुछ याद करने की चीज़ नही थी, अपितु लोगों के लिए जीवन को समझने की चीज थी, क्योंकि यह मानवीय सम्बन्धों के बहुविध,जटिल रूपों से सम्बद्ध है। वैदिक युग के आरम्भिक काल में राजा का चुनाव होता था। बाद में वह आनुवंशिक हो गया; राज्य का वर्तमान और भविष्य मुख्य रूप से सम्राट् के व्यक्तित्व पर निर्भर रहने लगा। प्रायः ऐसी कोई भी राजनीतिक जनसभा नहीं थी जो राज्य के आकार को गढ़ सके। स्वेच्छाचारी राजाओं के कामों को सामान्यजन धैर्य धारण करके देखते रहते थे। सामंती स्वार्थ के कारण विप्लव होते थे, ये ही जनविद्रोह थे। ललितादित्य और उस के समान शक्तिशाली सम्राटों के अधीन लोगों का जो जीवन था उसे मुश्किल से ही दासवृत्ति से अलग माना जा सकता है। जबकि धनवान् लोग मांस के पकवान और पुष्पसुरभित शीतल शराब का सेवन करते थे, सामान्य-जन बहुत भाग्यशाली थे यदि उन्हें प्रतिदिन दो बार चावल और सब्जी भी खाने को मिल जाती। कल्हण की राजतरंगिणी से ऐसी कई उल्लेखनीय शिक्षाएं मिल सकती हैं 'जिसमें प्राचीन-काल के अनन्त व्यापार सन्निहित हैं'।

राजनीतिक सूत्र और कूटनीतिक मर्यादाएं स्पष्ट करने के लिए ऐतिहासिक घटनाएं प्रस्तुत की गई हैं। वे अंश विशेष उल्लेखनीय हैं जिनमें कल्हण कश्मीर में व्यवहार्य राज्य के सिद्धांतों का संक्षेप में वर्णन करते हैं। इसे राजा 'ललितादित्य की कश्मीरी प्रशासन-संहिता' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन सिद्धांतों का मैकियावेलियन रंग भारतीय नीति शास्त्रों जैसा है। फिर भी कल्हण के सूत्र वाक्यों में एक विशिष्ट स्थानीय रंग है जो उन्हें एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मूल्यवान् बना देता है।

सबसे पहला सूत्र ही विशिष्ट रूप से कश्मीरी है। चूंकि अपनी संकीर्ण भौगोलिक सीमाओं के कारण कश्मीर के कोई विदेशी शत्रु नहीं थे, आंतरिक विग्रह रोकने के लिये निश्चित कदम उठाने हेतु शासकों को सचेत किया गया है। घाटी को घेरने वाले पहाड़ों के निवासियों को 'अपराध न होने पर भी दंड देना चाहिए'। कल्हड़ खस और दूसरे पहाड़ी कबीलों के बारे में सोच रहे थे जो निर्बल प्रशासन के समय कश्मीरियों को लूटते थे। इसी प्रकार उन्होंने राजा को यह सलाह दी कि ग्रामीणों के पास एक वर्ष से अधिक का अन्न-भंडार न छोड़ा जाए ताकि डमार-प्रमुख जमींदारों की शक्ति कुंठित रहे। इन ज़मींदारों के बार-बार होने वाले विद्रोहों के कारण कल्हण के समय और उनके पहले भी गृहयुद्ध हुए। वे उनके प्रति निश्चित रुचि प्रकट करते हैं और उन्हें बार-बार दस्यु कहते हैं। कल्हण कई बार लोगों की

राजनीतिक असंगतियों का उल्लेख करते हैं जो - चाहे बड़े हों या छोटे--हर बदलने वाले शासन के साथ अपना रंग बदल देते थे। आलसी अप्रभावित शहरी भीड़ के विशद विवरण मिलते हैं जो राजवंशीय परिवर्तनों के प्रति बिल्कुल उदासीन रहती थी। अपने देशवासियों) के प्रति कल्हण की स-सार टिप्पणियां इस प्रकार हैं जो तीक्ष्ण, सूक्ष्मदर्शी और समीक्षात्मक प्रतिभा वाला व्यक्ति ही कर सकता है। राजतरंगिणी में जहां-तहां फैली हुई इन टिप्पणियों से काफी कुछ सीखा जा सकता है।

कल्हण ऐतिहासिक घटनाओं का इस प्रकार मूल्यांकन कर सके जिससे उनके द्वारा भावी पीढ़ियों को शिक्षाएं मिल सकें। जब ऊपरी किशन गंगा घाटी में जयसिंह ने अभियान किया, तब कल्हण यह टिप्पणी करते हैं कि शत्रु की ताकत को पूरी तरह जाने बिना योजना बनाने से असफलता अपरिहार्य है। जयसिंह के विद्रोही विरोधियों के द्वारा की गई नीति-सम्बन्धी भूलों की वे समीक्षा करते हैं और यह बतलाते हैं कि इन भूलों के कारण राजा को कितनी सीमा तक सफलता मिली।

कश्मीर के इतिहास में एक और उल्लेखनीय शिक्षा मिलती है, वह है दरबारी षड्यंत्रों और रानियों की परस्पर ईर्ष्या का सम्राट् तथा जन-साधारण पर पड़ने वाला दूषित प्रभाव। ऐसा लगता है मानो कि कल्हण दरबार का बुद्धि-मत्तापूर्ण निरीक्षण करते थे और जो कुछ देखते थे उसका विवरण लिख लेते थे, इस आशा में कि उनके निरीक्षणों से भावी पीढ़ियां लाभान्वित होंगी। आर० सी० मजूमदार[1] के शब्दों में, "कश्मीर के राजाओं और रानियों की अविश्वसनीय विलासिता, जिसके कारण राज्य पर अकथनीय विपत्तियां आईं, उस युग के तौर-तरीकों और आचार-विचारों पर एक अस्वा-भाविक प्रकाश डालती है एवं हमारे प्राचीन शासकों के हितैषी निरंकुश राज्य के प्रिय स्वप्न को एक बर्बर धक्का देती है।"

वही लेखक यह भी कहता है, "किसी भी राजा के कार्यों को विलक्षित करने वाली मातृभूमि के रूप में भारत की कल्पना शायद ही हो।" यह दृष्टिकोण बहुत कुछ विवादास्पद है। कश्मीर की पृथक्कृत भौगोलिक स्थिति ने कश्मीरियों के तौर-तरीकों और प्रशासन को एक घिरावट का रूप दे दिया था। यह सिद्ध करने के लिए कल्हण की राजतरंगिणी में काफी कुछ है कि कश्मीरियों ने देश के जीवन-प्रवाह में हिस्सा लिया था। उदाहरणार्थ, कल्हण का इतिहास शोधकर्ता को उस सती-प्रथा के विषय में गवेषणा करने में मदद करता है जो शेष भारत के समान लंबे समय तक कश्मीर में प्रचलित रही। यह प्रथा सीथो-तातार रिवाज से शुरू हुई। सीथो-तातार अधिनायक के अधीनस्थ स्त्री-पुरुष उस की मृत्यु के बाद आत्महत्या कर लेते थे। वीरता के युग में यह प्रथा कश्मीर में, और भारत के शेष भागों में, बनी रही और केवल राजपरिवार तक ही सीमित नहीं थी। "कश्मीर घाटी में सती-प्रथा इतनी बद्धमूल थी कि माताएं, बहनें और दूसरे नजदीकी रिश्तेदार तक अपने प्रिय वियुक्त के साथ अपने-आपको जला डालते थे", कल्हण के प्रमाण पर एस० सी० राय[2] कहते हैं।

सब मिलाकर भारतीय राज्यों को आलेखित करने वाला कालिमामय दूसरी तरफ खुशदिल रंगों से रंगा हुआ भी था; आदिम राजनीतिक घटनाओं के

1. एंशेंट इंडिया, पृ० 386
2. अर्ली हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ कश्मीर, 1969, पृ० 116।

बावजूद जन-साधारण और उनके सम्राट् भी—अच्छे, बुरे, तटस्थ—संगीत और नृत्य जैसी ललित कलाओं को विकसित करते रहे – कला और वास्तुशिल्प भी अपने सर्वोत्तम रूप में विकासमान थे। धर्म, दर्शन और विज्ञान की भी अनेक शाखाओं में उल्लेखनीय प्रगति दृष्टव्य थी। किन्तु कल्हण के निरीक्षण यह अभिव्यंजित करते प्रतीत होते हैं कि महान् लोगों की उपलब्धियां समाज की कुछ प्राणभूत आवश्यकताओं के उत्तर स्वरूप थीं, विभिन्न क्षेत्रों में मानवीय प्रयासों को उच्च सफलता मिली क्योंकि समय अनुकूल था।

वाक्पुष्टा, दिद्दा, सुगमला और सूर्यमती तथा कई छोटी-मोटी रानियों के जीवन-क्रम यह प्रदर्शित करते हैं कि सार्वजनिक जीवन में स्त्रियों को समान अवसर प्राप्त थे। कल्हण (और दूसरे इतिहासकारों) ने प्राचीन भारतीय स्त्रियों के पांडित्य और विद्वत्ता का प्रचुर शब्दों में संकेत दिया है। स्त्रियों का परदे में रहना या पृथक्करण अज्ञात था, क्योंकि स्त्रियां घरेलू पृष्ठभूमि से राजनीतिक मंच पर आ गई थीं। रणजित सीताराम पंडित-कृत राजतरंगिणी के अनुवाद की प्रस्तावना में जवाहर लाल नेहरू के अनुसार—'कल्हण के ग्रंथ में स्त्रियां एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हुई प्रतीत होती हैं, न केवल परदे के पीछे बल्कि सभाओं और मैदानों में नेता व सैनिक के रूप में भी।' रानियों के अपने स्वयं के कोष थे और वे प्रशासन में सक्रिय भाग लेती थीं। किसी भी नागरिक या सैनिक पद पर कार्य करने के लिए लिंग या जाति (या जन्म) की कोई रुकावट नहीं थी। 'नर्तकियां' तक राजनीति में आक्रामक भाग लेती थीं। "कश्मीर एक ऐसी भूमि है जिसे विप्लव में आनंद आता है..." कल्हण लिखते हैं, "इस देश में देवदासियां भी राजा के विरुद्ध विद्रोह में आनंद लेती हैं।"

कर्कोट-उत्तर काल में जमीन के बढ़ते हुए महत्त्व पर जोर दिया गया है। किन्तु जमीन जोतने वालों की ठीक-ठीक जीवनदशा के विषय में राजतरंगिणी मौन है, इस विषय में हम केवल जमींदार डमारों द्वारा उगाहे गए लगान से ही कुछ अनुमान लगा सकते हैं। सैन्य जाति तंत्रियों और डमारों के प्रति—जो अशांति के समय स्वयं राजा बनाने वाले बन जाते थे—कल्हण अपनी अरुचि अठिनाई से छिपाते हैं।

अस्पृश्यता कश्मीर में अज्ञात थी— वह सम्भवत: बौद्ध-प्रभाव के समय प्राय: अस्तित्वहीन हो चुकी थी। राजा चक्र वर्मा ने एक 'अछूत' डोंब स्त्री से विवाह किया था। किन्तु डोंब सही में अछूत नहीं थे जैसा कि भारत के दूसरे भागों में जाना जाता है। कल्हण लिखते हैं कि डोंब अच्छे संगीतज्ञ थे। एक दूसरी उल्लिखित निम्न जाति चांडाल है—इनमें से कुछ शाही अंगरक्षक थे। राजतरंगिणी से यह भी प्रकट होता है कि शूरतम सेनापतियों में कुछ ब्राह्मण थे—बाद में मराठों के समय यह अवस्था फिर आई। यह बात ध्यान देने योग्य है कि, शेष भारत में सर्व-सामान्य, ब्राह्मण और निम्न जाति के मध्य की जातियां कश्मीर में अज्ञात थीं।

राजतरंगिणी कश्मीर के राजाओं के शासनों के विवरण के अलावा भी काफी कुछ है। कल्हण समकालीन सामाजिक और राजनीतिक जीवन का एक प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करते हैं। कश्मीर और समीपवर्ती क्षेत्रों के अतीत के विषय में राजतरंगिणी एक वृहद् सूचना कोष है। कल्हण के बाद के कश्मीरी इतिहास की चित्रित धारा को समझने में भी इससे सहायता मिलती है। कल्हण के काल और कश्मीर पर मुगल अधिकार (1588 ई०) के बीच का समय राजतरंगिणी के अन्तिम भाग में विद्यमान ऐतिहासिक

परिस्थितियों और प्रवृत्तियों की निरन्तरता सूचित करता है।

राजतरंगिणी के उपदेशात्मक और वर्णनात्मक पद्य कल्हण की काव्यशैली के एक विशिष्ट अंग हैं। अपने स्रोतों के अनिश्चयात्मक आभास के बावजूद, कल्हण अपने विषय में जो कुछ कहना चाहते हैं उसे वे विनम्र शब्दों में इन पद्यों में व्यक्त करते हैं :

यद्यपि दूसरे पुरालेखों द्वारा लिखे गए विषय पर मैं पुन: लिख रहा हूं, गुणी जनों को कारण सुने बिना दूसरी ओर मुंह नहीं मोड़ लेना चाहिए।

वहां कैसी प्रतिभा प्रदर्शित हो सकती है, जहां आधुनिक व्यक्ति अपने ग्रन्थों में उन विवरणों को संगृहीत करते हैं जो दिवंगत व्यक्तियों ने अपने समकालीन राजाओं के इतिहास के विषय में लिखे थे ! अतः--हर प्रकार से उपेक्षित विषय—अतीत के तथ्यों के इस वर्णन में मेरा प्रयास केवल संग्रह करने का ही रहा है।

उनके ग्रन्थ का नीतिपरक उपदेश है, "सम्पूर्ण सांसारिक समृद्धि क्षणस्थायी है, नीति से हटने का प्रतिफल मिलता ही है।" उनके ग्रंथ की आठ तरंगों में से चार का अन्त इसी प्रकार की उक्तियों से होता है। राजतरंगिणी की अन्तिम तरंग में उनका गहन विचार हे, "छाया का मार्ग अनियंत्रित होता है, जबकि धूप प्रकृतिवश शतधा, सूक्ष्मता से अनुसृत होती है। इस प्रकार दुःख सुख से अलग है किन्तु सुख की मर्यादा अनन्त दुःख की चोट और दर्दों से प्रतिबद्ध है।"

कल्हण भाग्यवादी नहीं हैं, वे टॉमस हार्डी के समान, 'परिस्थिति की विकटता' में विश्वास नहीं करते। बौद्धमत के अनुसार, वे कर्म में दृढ़ विश्वास रखते हैं और यह सम्पूर्ण राजतरंगिणी में अग्रगामी है। यह एक उल्लेखनीय विशेषता है क्योंकि उनके समय कश्मीर में शैवमत ने बौद्धमत की परिपूर्ति कर दी थी। कल्हण जानते थे कि हर चीज़ काल के साथ मुरझा जाती है और समयानुसार नष्ट हो जाती है, केवल कलाकार ही चंचल रूप को पकड़ सकता है और अमरता के सांचे में ढाल सकता है।

कल्हण चाहते हैं कि पाठक उनके साथ धीरज रखे। वे यह स्पष्ट कर देते हैं कि वे किसी समकालीन महाराजा के चापलूस नहीं है। उन्होंने जो कुछ भी संकलित किया या लिखा है उसकी तुलनात्मक वस्त्वात्मकता पर निर्भर रहा जा सकता है और इस लिए इतिहास की धारा से उन्होंने जो कुछ सीखा है उसका लाभ पाठक भी उठा सकता है।

पश्चात्यवर्ती संस्कृत पुरालेखों के स्वल्प ऐतिहासिक विवरणों के अधिक अच्छे स्पष्टीकरण हेतु हमें कल्हण की राजतरंगिणी की सामान्यत: ठीक-ठीक सूचना को धन्यवाद देना चाहिए। इस प्रकार महान् कवि-इतिहासकार कल्हण ने न केवल कश्मीर की प्राचीन संस्कृति और इतिहास को विस्तृत होने से बचाया, बल्कि इतिहास के विद्यार्थी को पुरालेखकों के विशृंखल विवरणों को संश्लेषित करने में भी सहायता प्रदान की। और, अन्तिमतः, कश्मीर के इतिहास का विद्यार्थी अतीत के साथ अधिक सन्तोषजनक रूप से बौद्धिक वार्तालाप कर सकता है— और उस काल से नैतिक तथा वास्तविक शिक्षाएं ले सकता है—जो कि भारत के किसी अन्य राज्य के विषय में अपेक्षाकृत कम सम्भव है।

('कल्हण' (साहित्य अकादेमी) से साभार)

●

□ मनोज शर्मा

विस्थापित

[एक]

बेटी !
नाज़ों से पली बढ़ी
राशन की कतार में खड़ी
पहुंच गई है कहीं दूर-—
बेघर होने के बावजूद
नहीं हुई हैं यादें बेघर
बेघर नहीं हुई त्यौहार मनाने की उमंग
नहीं छूटा
एक सांस में दौड़ कर
टीला चढ़ने की शर्त का रोमांच
बेघर नहीं हुई
सांसों में बसी
फूलों और घास की महक

सहेलियों संग जुड़ी हसीली फब्तियां भी
नहीं हुई है बेघर
नहीं हो पाया बेघर, उचक कर
भतीजे के लिए तोड़ा
दुपट्टे से किया साफ सेब का रंग,
बेघर नहीं हुई
उस शरारती टहनी की चुभन
जो दिन में कई-कई बार
बालों में उलझ-उलझ जाती थी
बिना कोशिश किए ही सोचती है बेटी
ऐसा बहुत-बहुत कुछ
बेघर नहीं हुआ □

[दो]

बतियाती है विस्थापित सहकर्मी
कुछ और ही होता था कश्मीर में
भारत और पाकिस्तान के
बीच का क्रिकेट मैच
बताती है चश्मा उतार वह
कि जीत के बावजूद
पहरा लाज़िमी रहता था पूरे चेहरे पर

बताती है विस्थापित लड़की
चिहुंकता सच
कल जीतने पर, पहली बार
गुपचुप रहने वाला पापा
गली में आ
गल्ला फाड़ चिल्लाए थे □

(नाबार्ड, शास्त्रीनगर, जम्मू)

●

□ मोतीलाल 'पुष्कर'

हिन्दू एकता के सूत्र

भारत देश की बिगड़ी स्थिति को सुधारने के लिए गत सौ वर्षों में विभिन्न प्रयोग किए गए। ये धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में किए गए। इनके संचालन में स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानंद, अरविंद घोष, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, भीमराव अंबेदकर ने प्रमुख भूमिका निभाई। इन सभी महापुरुषों के अन्त:करणों में देशहित तथा समाजहित के लिए प्रबल ज्वाला भड़क रही थी, कुछ ऐसे प्रयास किए गए जिन से यह सनातन समाज अपनी चिरनिद्रा को त्यागकर अपने भाग्य को संवार सके। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने एक लेख में भारत की दु:स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा था कि यह देश एक लाश के समान धरती पर पड़ा है, जिसे चीलें, गीध, कौवें आकार अपनी-अपनी भूख मिटाने के लिए नोचते जा रहे हैं। यह एक वास्तविक चित्रण था तत्कालीन भारत का।

इन महामानवों ने जिस भारतीय समाज के उत्थान के लिए अपनी शक्ति का आधार प्रदान किया उस महान् जनसमुदय का नाम निर्देश ही अनिश्चितता का शिकार था। कोई उसे सनातन धर्मी समाज, कोई आर्यसमाज, कोई ब्रह्मोसमाज, कोई बहुसंख्यक समाज आदि नामों से नामकरण करके इसके हितों को आगे बढ़ाना चाहता था। दूसरी तरफ अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय ने उनकी नज़र में 'पराजित', 'पददलित', 'पराक्रान्त', 'दीनहीन', 'अर्धसभ्य', 'दोषपूर्ण' इस जनसमूह के लिए गैर मुस्लिम शब्द का प्रयोग किया। यहाँ का मूलसमाज विस्मृति के गर्त में पड़ा हुआ अपनी सत्ता के प्रति भी सचेत नहीं था। वास्तव में विस्मृति को त्याग कर इसके लिए दिशा धर्म, नाम और मान का आभास कराने वाला प्रथम महापुरुष केवल स्वामी विवेकानंद ही था। इसी महान् आत्मा ने अपने इस भारतीय समाज को 'हिन्दू समाज' इस नाते प्रेम एवं स्वाभिमान युक्त चेतना से पुकारा। उन्होंने अन्यान्य महापुरुषों की तरह सुधारवादी चोला पहन कर इस सुप्त समाज को सीख देने का लक्ष्य सामने रखकर अपना कर्तृत्व नहीं निभाया अपितु समाज को देवता स्वीकार कर इसकी महानता के सामने नतमस्तक हो सेवा करने का संकल्प लिया। वे अमेरिका एवं यूरोप में जाकर गरजे कि मैं उस समाज का प्रतिनिधि हूं जो ऋषियों की संतान है, जो अवतारी महापुरुषों का अनुगामी समाज है, जो सनातन संस्कृति का समाज है, जो ज्ञान का प्रकाश लेकर जगद्गुरु के नाते अन्धकार को हटाकर सन्मार्ग का प्रदर्शक रहा है। उन्होंने स्वाभिमान एवं गौरव से कहा—मैं हिन्दू समाज का संपूर्ण स्वरूप हूँ। इस गर्जना ने एक चैतन्य को जन्म दिया। यही भावना आगे बढ़ी और आज सारे भारतीय समाज के प्रति चिन्तना जगी है। बिखराव हटाकर एकता की बात की जा रही है। उन तत्त्वों को प्रकट करने का प्रयास हो रहा है, जो इस समाज के मनीषियों ने गहन चिन्तन के पश्चात् मानव के सामने प्रस्तुत किए है। उनका चिन्तन् दैवी शक्ति से प्रेरित पावन अन्त:करणों की उपज थी। अच्छा होगा कि हम आज इस हिन्दू शब्द के आधार को भी ढूँढ़े। हिन्दू-हिन्दू की एकता का आधार स्थापित करें। स्वामी जी ने ही कहा है कि "गर्व से कहो मैं हिन्दू हूँ।"

हिंदु शब्द का सामान्य आधार—

हिंदु शब्द संक्षेप में सिन्धु शब्द से विगड़कर बना है। यह सरल एवं सीधी बात है कि हम कश्मीरी भाषा में 'शत' को 'हत' कहते हैं। फारसी भाषी संस्कृत के सप्ताह को हफ्ता कहते हैं। यह लिखने का अभिप्राय केवल इतना मात्र है कि संस्कृत का 'श' और 'स' कई एशियायों और यूरोपीय भाषाओं

में 'ह' में बदलता है । इसी प्रकार सिन्धु का 'स' भी 'ह' में बदलने से हिन्दू बन जाता है । प्रश्न यह उठता है कि क्या सिन्धु का अर्थ सिन्धु क्षेत्र और सिन्धु नदी तक ही सीमित है ? सिन्धु वास्तव में सागर को कहते हैं । भारत वर्ष पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण में सिन्धु से या सागर से घिरा है । इस लिए यह देश सिन्धुदेश और इस सिन्धुदेश की सारी प्रजा हिन्दु प्राण कहलाती है । विष्णु पुरान में लिखा है— भारतवर्ष वह महान् देश है जिसके उत्तर में प्रभु ने हिमालय पर्वत और दक्षिण में हिन्द महासागर को प्राकृतिक सीमा के रूप में स्थापित किया है । संस्कृत का प्रथम नाटककार भास लिखता है कि जिस मेरी मातृभूमि का विस्तार हिन्द महासागर तक है, जिसकी साकार देह लता के दो कर्णभूषण हिमाचल और विंध्याचल है जो एक साम्राज्य की स्वामिनी है उस पर सम्राट राजसिंह का शासन चिरस्थायी हो ।''

कवि कुलगुरु कालिदास ने अपनी ''कुमार संभव'' नामक रचना का प्रथम श्लोक इस प्रकार कहा है— यह हिमालय स्वयं भारतमाता की उत्तरी सीमा बनकर साथ-साथ अपने पश्चिम और पूर्व के छोरों से सिन्ध सागर और गंगासागर तक फैल कर यह सिद्ध करना चाहता है कि मैं भारतभूमि की सीमा का अंकन कर रहा हूँ । मैं इस देश का मापदंड हूँ ।'' ऐसे अनेकानेक प्रमाण हमारे सामने हैं जो इस दृश्य को उजागर करते है कि मानवीय समाज को सिन्धुदेशी प्रजा होने का गर्व रहा है । इसी गौरव की अभिव्यक्ति करने वाला शब्द हिन्दू है । कहने का सरल अभिप्राय है कि हिन्दू समाज एक विशेष भूखंड पर पला है । यहीं बढ़ा है । वह कुछ विशेषतायें लेकर आज तक चिरंजीव है । इसी भाव को ''वन्दे मातरम्'' ''सारे जहाँ से अच्छा'' और यह वेद वाक्य—''माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' ध्वनित करते हैं । इसी समाज की सत्ता अक्षुण्ण रखने के लिए आज सजग भारतीय सचिन्त हैं । इसी परिप्रेक्ष्य में हिन्दू-एकता के सूत्रों को ढूँढ़ना होगा । उन सूत्रों में सर्वोच्च प्रथम सूत्र है :—

भारत भक्ति—

इस पुण्य भूमि मानवता के प्रति जो अगाध श्रद्धा हमारे पूर्वजों ने हृदयागार में धारण की थी और जिसको साकार रूप देने के लिए उन्होंने तीर्थाटन चारधामों की यात्रा, प्रकृति के विभिन्न रूपों में देवालयों के दर्शन किए थे, वही बात उन्हें हिन्दुत्व के प्रतिनिधिजन बनाती है । कश्मीर में हम प्रतिदिन प्रातःकाल मुखशोधन करने के क्षण यह मन्त्रोचार करते है :—

> गंगा प्रयाग गमनै नैमिष-पुष्करादि,
> तीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरेः प्रसादात ।
> आयान्तु तानि कर पदम पुटे मदीये,
> प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम ॥

अर्थात् गंगा जी, प्रयागराज, गंगा जी, नैमिष तीर्थ पुष्करराज आदि जितने भी तीर्थ इस भारत भूमि पर विद्यमान हैं, वे मेरे और करकमल में उपस्थित होकर निशा का कलंक धो डालें ।

स्वामी विवेकानन्द जी जब विदेश से घर लौटे तो इस धरती पर लोटकर पोट हो गए तो किसी ने पूछा कि स्वामी जी इसका अर्थ क्या ? तो उत्तर मिला कि विदेश प्रवास के दौरान मैंने अनुभव किया कि अपने इस देश की माटी ही महिमाशालिनी है जो मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करती है । चीन की कैद से छूटकर भारत के सैनिकों ने इस देश की सीमा पर क़दम रखते ही देश की माटी को माथे पर लगाया । मदन मोहन मालवीय जी ने विदेश यात्रा करने के समय भारत की माटी के पावन कण साथ रखे और अपने को गौरवान्वित एवं पुण्यान्वित अनुभव किया । यही हिन्दुत्व है । जितनी अटूट श्रद्धा भारतीय व्यक्ति में भारत के प्रति घनीभूत हो जाती है उतना ही हिन्दुत्व का प्रबल ज्वार उसमें फूट पड़ता है । क्या उसको भी हिन्दू कहें जो भारत की हार पर जशन मनाता है ? चिरागां करता है । पटाखे दागता है । नहीं नहीं । हमारी जीत पर मातम बिछ जाता है इनके घर द्वार पर !

दूसरा भाग अगले अंक में

☐ सुरेंद्र चन्ना भारती

गुरु की पहचान

हमारे देश के महात्माओं, साधुओं, साधकों, ज्ञानियों, ध्यानियों और योगियों ने गुरु महिमा में बहुत कुछ कहा व लिखा है।

गुरु शब्द में 'गु' अन्धकार का द्योतक है और 'रु' तेज का द्योतक है। इस प्रकार गुरु शब्द अज्ञान रूपी अन्धकार को हरने वाला प्रकाशमय ब्रह्म है।

गुरु महिमा की धर्म शास्त्रों में भी अच्छी तरह से व्याख्या की गई है। श्री गुरु गीता में कहा गया है।

गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरुदेव पर ब्रह्म तस्यै श्रीगुरवे नमः ॥

अर्थ—गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही शंकर है एवं गुरु ही परब्रह्म है। अतः उन्हें प्रणाम है। शास्त्रों ने गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश का रूप जाना है।

हेतवे जगतामैव संसाराणव सेतवे ।
प्रभवे सर्व विधानां शंभवे गुरवे नमः ॥

अर्थ—जो गुरुदेव जगत के हेतु हैं, संसार रूपी सागर को पार करने को सेतु के समान हैं, और सब विधाओं के जनक (पिता) है। उन शिव रूपी गुरुदेव को प्रणाम।

अ-त्रिनेत्रः सर्व साक्षी अ-चतुबहिुरच्युतः ।
अ-चतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरु काथित प्रिये ॥

अर्थ— भगवान शंकर माता पार्वती से कहते हैं कि हे प्रिये बिना तीन नेत्र के जो सर्व साक्षी शिव का स्वरूप है, बिना चार हाथों के जो भगवान् विष्णु है और बिना चार मुख के जो चार मुख वाले भगवान ब्रह्मा जी के समान है। ऐसे गुरुदेव को ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप कहा गया है। अतः तीनों उस आदि शक्ति का ही रूप हैं। उसी शक्ति के प्रभाव से सृजन, पालन और संहार आदि कार्य करने के समर्थ होते हैं। जिस प्रकार ब्रह्मा जी सृजन कार्य करते हैं, उसी प्रकार गुरुदेव भी साधकों का निर्माण करते हैं।

गुरु नानक देव जी ने भी अपनी बानी में, गुरु को प्रभु, ईश्वर का रूप जाना है। गुरु जी कहते हैं :—

सतिगुर विच आपु रखी ओनु करि परगटु आखि सुणाइआ।

अर्थ—गुरु और ईश्वर एक ही है। दोनों में सिर्फ इतना भेद है कि ईश्वर गुरु का ही वास्तविक स्वरूप है और गुरु मनुष्य के चोले में ईश्वर है। ईश्वर गुरु के अन्दर बैठकर ही बोलता है।

ईश्वर और गुरु महिमा में नानक देव जी आगे कहते हैं।

गुर की मूरति मन महि धिआनु । गुर कै सबदि मंत्रु मनु मानु ॥
गुर के चरन रिदै लै धारउ । गुर पारबहमु नमसकारउं ॥

नानक देव जी ने गुरु की महिमा व ईश्वर प्रेम का, जहां गुनगान किया है। वही हमें नकली गुरुओं से सावधान रहने को भी कहते हैं। नानक जी आगे कहते हैं।

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ। ताकै मूलि न लगीए पाइ ॥
धालि खाहू किछ हथहु देइ। नानक राहु पछाणाहि सेई ॥

अर्थ—अगर कोई गुरु और पीर बन कर अपने शिष्यों और सेवकों से मांगता फिरता है। तो ऐसे गुरु या पीर के चरणों में अपना शीश अथवा माथा नहीं झुकाइये। जो महात्मा या गुरु अपनी मेहनत की कमाई करके अपना जीवन बिताता है और साधकों की मुफ्त सेवा करता है, ऐसे महात्मा की खोज करनी चाहिये।

कबीर दास जी ने भी गुरु की महिमा का खूब गुनगान किया है। कबीर जी कहते हैं :—

कबीरा हरि के रूठते, गुर के सखे जाई।
कहै कबीरा गुरु रूठते, हरि नहीं होत सहाइ ॥

अर्थ—अगर ईश्वर हम से रूठ भी जाये, तो गुरु की शरण में जाकर ईश्वर को मना सकते हैं। लेकिन अगर गुरू रूठ जाये, तो ईश्वर भी हमारी मदद नहीं कर सकते।

पूर्ण गुरू और सच्चे शिष्य के बारे में कबीर जी आगे कहते हैं :---

सिष तो ऐसा चाहिये, गुरु को सरवस देय।
गुरु तो ऐसा चाहिये, शिष को कछू न लेय ॥

अर्थ—गुरु ऐसा होना चाहिये जो बिना दान-दक्षिणा के या लालच के शिष्य को अपना सब कुछ दे सके, शिष्य को प्रभु से एकाकार करा सके और शिष्य ऐसा होना चाहिये ऐसा गुरू प्रेमी होना चाहिये, जो अपना तन, मन, धन, बिना गुरु के मांगे गुरु के चरणों में अर्पण कर सके।

गुरु अमरदास जी ने भी मोह जाल में फंसे मनुष्यों को प्रभु की राह में ले जाने वाले गुरूओं की महिमा का इन शब्दों में गुनगान किया है।

गुर सबदि मिलहि से बिछुड़हि नाहीं सहवे सचि समावणिआ।

अर्थ—जब हम सतगुरु के जरिए शब्द रूपी प्रभु नाम का पकड़ लेते है, तब शब्द हमें छोड़ता नहीं है, अपने साथ लेकर परमात्मा में ही समा जाता है।

गुरु गिआन अंजुन सचु नेत्री पाइआ।
अंतरि चानणु अभिमानु अंधेरू गवाइआ ॥

अर्थ—जब सतगुरु के ज्ञान और अनुभव के अनुसार हम आंखों में शब्द रूपी सुरमा डालते हैं, तो अन्धेरा हमारे रास्ते से दूर हो जाता है। हमें अपने अन्दर प्रकाश दिखाई देता है।

महाराज चरण सिंह जी भी गुरु की महिमा करते हुए कहते हैं :—

गुरु बचन करो आधारा। गुरु दर्श निहारो सारा ॥

आगे कहते हैं :—

गुरु चरन बसे अब मन में। मैं सेऊँ दम-दम तन में।
फिर प्रीत लगी घट धुन में। चढ़ पहुंची पहिली सुन में ॥

पल्टू साहिब ने भी अपनी 'बानी' में योग्य गुरु की पहचान में कहा है। गुरु वह है जो हमारी आत्मा को अनहद शब्द के साथ जोड़ कर प्रभु परमेश्वर से मिलाता है। कहते हैं :—

धुन जानै जो गगन की, सो मेरा गुरुदेव।

पल्टू साहिब आगे फिर कहते हैं :—

संत सनेही नाम है, नाम सनेही संत।
नाम सनेही संत नाम को वही मिलावे।
वे है वाकिफकार मिलने की राह बतावै॥

साईं बुल्ले शाह ने भी अपनी वानी में गुरु का इस तरह गुनगान किया है :—

ना खुदा मसीते लभदा, ना खुदा खाना कावे।
ना खुदा कुरान कतावा, ना खुदा नमाज़े॥
ना खुदा मैं तीरथ डिठा ऐने पैंडे झाके।
बुल्ले शोह जद मुरशद मिल गिआ छूटे सभ तगाड़े॥

शास्त्रों में गुरु को परम कहा गया है। परम का अर्थ परे है। अर्थात् मोह-माया से परे। संसार की कामनाओं व वासनाओं से परे।

गुरु वह है, जो लालच आलस्य, मान-अपमान, अहंकार और धन-दौलत का याचक नहीं और न ही अमीर-गरीब ऊंच-नीच, जात-पात का भेदभाव करने वाला हो, धर्म शास्त्रों का ज्ञाता या ज्ञानी हो, जिसकी जीभ पर सरवस्ती का वास हो, विषय विकारों से परे हो, आत्म शक्ति सम्पन्न हो, जीवों का मान करने वाला हो, जीव तत्व को परमात्मा का अंश मानता हो।

भगवान शंकर माता पार्वती से योग दीक्षा के उपयुक्त सामर्थ्यवान गुरु के लक्षण इन शब्दों में कहते हैं :—

श्री गुरु परमेशनि शुद्धवेशो मनोहर:।
सर्वलक्षणसम्पन्न एर्वावयवशोभित:॥
सर्वागमार्थतत्वज्ञ: सर्वतन्त्र विद्यान्वित:।
लोकसम्मोहनाकारो देववत् प्रियदर्शन:॥
सुमुख: सुलभ: स्वच्छो भ्रमसंशयनाशक:।
इङ्गिताकारवित् प्राज्ञ: ऊहापोहविचक्षण:॥

अर्थ—जिस का वेश शुद्ध वस्त्रों से सुशोभित और मनोहर हो, जो शरीर से सुन्दर और सर्वगुणसम्पन्न हो, जो सब शास्त्रों के अर्थ जानता हो, शास्त्र कथित क्रिया कर्म की व्यवस्था विधान को जानता हो, जिस पर लोग मोहित हो जो पास में आने वाले सभी को प्रसन्न कर देता हो, देववत् प्रिय दर्शन हो, जो प्रसन्न रहने वाला हो, शास्त्र के अनुकूल और प्रतिकूल विचार में विचक्षण हो, जो तत्व को सहजता से समझा सकता हो,

जिसके कथन से कठिन से कठिन विषय या बात भी आसानी से समझ में आ जाये, जो भ्रम संशय दूर कर सके। ऐसा उत्तम पुरुष ही तत्व ज्ञान की दीक्षा का उपयुक्त गुरु है।

भगवान शंकर योग्य गुरु के बारे में आगे कहते हैं, कि जिस की दृष्टि बाहर रहते हुए भी, लक्ष्य अन्तर में होता हो। जो सर्वज्ञ और देश काल को जानने वाला त्रिकालदर्शी हो, सिद्धिया जिसकी आज्ञा में हैं, जिस को जो आज्ञा देता है, सो सिद्ध होती है, जो कृपा करने और दण्ड देने में समर्थ हो। अपना सामर्थ्य जब चाहे देकर वापस ले सकता हो. जो दूसरों को अपने आतम सामर्थ्य से शक्ति संचार और ज्ञान बोध कराता हो, जो शान्ति प्रिय हो और दूसरे प्राणियों पर दया करता हो, जिसने अपनी वासमाओं को जीत लिया हो, अथवा जो जितेन्द्रिय हो, जो अति गम्भीर हो, जो सद्गुणों से भूषित है, ऐसा उत्तम पुरुष ही योग दीक्षा के लिए योग्य गुरु है।

अगर ऐसा महापुरुष महात्मा कहीं भी किसी भगत को मिल जाए, तो आँखें बंद करके उनकी शरण में चला जाये। ऐसा उत्तम, पूर्ण गुरु ही आप को बुराइयों से छुटकारा दिलाकर पाप-मुक्त कर सकता है, दूषित मानसिकता को शुद्ध निर्मल करके भवसागर पार करा सकता है। ऐसे महान गुरु को शत-शत बार प्रणाम।

योग्य गुरु से दीक्षा लेने के बाद, हमें तन, मन, धन से समर्पण करके प्राप्त हुए मंत्र का प्रात: व शाम के समय जाप करके अपने जीवन को सार्थक बनाना है। अगर बुरी वृत्तियाँ भी है, तो उन्हें छोड़ने का संकल्प करना है। गुरु के आशीर्वाद और मंत्र जाप करने के बाद से ही हमारे विकार नष्ट होने लग जायेंगे। बुराईयां हम से खुद-ब-खुद दूर होती जायेंगी। सीधे शब्दों में हमारे बुरे संस्कार और वृत्तियाँ शनै:-शनै: समाप्त होती जायेगी। हमारे मन से हिंसा, आलस्य, झूठ, फरेब, अहंकार, वासना, मोह, जात-पात, और ऊंच-नीच का झूठा आवरण आहिस्ता, आहिस्ता क्षीण होता जायेगा। मन के निर्मल व शुद्ध होते ही, हमारी आत्मा का परमात्मा से मिलाप खुद-ब खुद शुरू हो जायेगा। इस काम के लिए हमें किसी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च, मठ, विद्यालय या किसी योग्य पंडित, मौलवी, पादरी, ज्ञानी के पास जाने की ज़रूरत नहीं। हमें किसी अनुष्ठान या यज्ञ की भी आवश्यकता नहीं। अगर किसी चीज की ज़रूरत है, तो वह है, एक योग्य गुरु व अपनी आतम शुद्धि की, मन को मैल रहित निर्मल शुद्ध बनाने की।

पूर्ण महात्मा, साधु या गुरु के लक्षण :—

योग्य गुरु के पास बैठने से, क्या आँखें बंद करने के बाद आप महसूस करते हैं कि :—

—आप का मन प्रसन्नचित्त हो उठा है या आप को आनन्द आ रहा है।

—आप आनन्द से झूम रहे हैं ।

—आप को अपने आसपास के वातावरण से किसी फूल की खुशबू या अगरबत्ती की महक आ रही है।

—आप के पेट से गुड़गुड़ाहट या चक्र की आवाज़ आ रही है।

—आप के दिल की धड़कनें तेज हो रही हैं या दिल उछलता जान पड़ रहा है।

—आप को कोई नाद (वाद्य यन्त्रों की आवाज़) सुनाई दे रही है।

—आप को किसी के स्पर्श का आभास हो रहा है।

ऊपर लिखी हुई बातों में से, क्या आप कोई सी भी बात महसूस करते हैं या कर रहे हैं, तो आप अपने आप को भाग्यवान जानिये। आप का योग्य गुरु से मिलाप हो गया है। आप ऐसे पूज्य गुरु से प्रार्थना करके शिष्य-पद पाने की कोशिश कर सकते हैं। अपने आप को धन्य कर सकते हैं।

अयोग्य गुरु के लक्षण :—

कामाक्षा तंत्र में अयोग्य गुरु के बारे में इस प्रकार कहा गया है :—जो क्षय रोगी है, चर्म-रोग, फोड़ा-फुंसी, दाद-खाज से पीड़ित है, जिस के नख विकृत हो गये हैं, जिस के नीले व काले दान्त हैं। कानों से सुनता नहीं है। जिस की आँखें कुसुम की तरह लाल हो, जिस की दृष्टि शक्ति विकृत हो गई है। जो अन्धा हो, जिस का सिर खल्वाट है। जो अंगहीन हो, अथवा जिस का कोई अंग अधिक हो, जिस की आँखें बिल्ली की तरह पिंगल हों, जिसकी नाक से दुर्गन्ध आती हो, बहुत छोटे कद का वामन अथवा कुबड़ा हो, जिस की वासना प्रबल है, अथवा विषय विकारों में फंसा हुआ है। ऐसे किसी भी शारीरिक दोष से युक्त अशुभ लक्षण वाला गुरु निन्दित होता है।

अयोग्य गुरु के बारे में आगे और कहा गया है कि शिखा-सूत्र से रहित और मूर्ख हो, जो वेद-शास्त्र के ज्ञान से वर्जित हो, वैदिक मार्ग पर चलता हो या न जानता हो, जो असभ्य भाषा बोलता हो, जो यजमानवृत्ति से जीवन निर्वाह करता हो या जो वैधकवृति वाला हो (आज कल बहुत से वेषधारी साधु लोगों को दवाई देकर अपनी और आकृष्ट करते हैं और बाद में ज्ञान के लिए गुरु भी बन जाते हैं), जो कामुक स्त्री के वश में रहता हो, जो बहुत सा खाने वाला हो, क्रूर प्रकृति वाला, मिथ्यावादी हो, जो गांजा, चर्स, भांग, सलफा, अफीम, दारु, ब्राउनशुगर, स्मैक, आदि मादक पदार्थों का व्यसनी हो, जो दूसरों का अहित करने वाला हो, पशु प्रकृति वाला डरपोक और रोगों से पीड़ित हो, जो कोई कर्म न करना चाहता हो, जो आलस्य में रहता हो, जो भोगी और दूसरों पर भरोसा करके जीवन व्यतीत करता हो, जिस का मस्तिष्क विकृत हो, जो लोगों को धर्म और भगवान के नाम पर न अच्छे भविष्य का प्रलोभन दिखाकर धन ऐंठता हो, जो शिष्यों का हित साधन करने में असमर्थ हो, जो भोग-ऐश्वर्य चाहने वाला हो, ऐसे गुरु का त्याग करना चाहिये या उसे गुरु नहीं बनाना चाहिये या उस के प्रति गुरु भावना नहीं रखनी चाहिये। ऐसे वृत्ति वाले व्यक्ति को गुरु बनाने से न तो इस जन्म में और न ही दूसरे जन्मों में भला हो सकता है।

कुलार्णव तंत्र में कहा गया है, कि अगर अज्ञान वश किसी ने अज्ञानी और संशयकारक गुरु कर लिया है, तो उस गुरु का त्याग करके दूसरे योग्य गुरु के पास जाने में शिष्य को हिचकिचाहट नहीं करनी चाहिये। ऐसा करने से शिष्य का अज्ञानी गुरु त्यागने से, गुरु-त्याग दोष नहीं लगता है। नया गुरु करने से पहले, उसे अच्छी तरह परखना चाहिये कि क्या वह गुरु बनने के काबिल है या नहीं। उसके पास बैठकर बातचीत द्वारा पता लगाया जा सकता है कि क्या वह शास्त्रों का ज्ञाता, निर्मल बुद्धि वाला, अहंकार रहित देखने में अलौकिक आकर्षण घमंड रहित, शान्त प्रिय, दया करने वाला, जितेन्द्रिय, अति गम्भीर, सिद्ध पुरुष और सद्गुणों से भूषित है। पास बैठने से आनन्द आ रहा है, सुगन्ध का आभास हो रहा है। अगर ऐसी बातें महसूस कर रहे हैं, तो ऐसे गुरु से दीक्षा ली जा सकती है।

अगर ऐसा दिव्य गुरु ना मिले फिर भी अच्छा गुरु देख परख-कर, कर सकते हैं। एक बात ध्यान में रखनी चाहिये कि जिस किसी गुरु से दीक्षा ले, गुरु मंत्र लेने के बाद एक साल के अन्दर अन्दर शक्ति-पात के

लक्षण का थोड़ा बहुत भी प्रत्यक्ष में अनुभव नहीं होता हो, तो ऐसा गुरु त्याग करके दूसरे अनुभवी गुरु से दीक्षा ग्रहण करनी चाहिये। दूसरे गुरु की शरण जाने पर भी पूर्व-गुरु, गुरु-भ्राता या गुरु-पुत्र आदि का अनादर न करें उनका सम्मान करते रहिये।

अगर आप को योग्य गुरु के मिलने के बाद शक्ति-पात के लक्षण अनुभव होते हैं, तो जानिये कि आप की महा-शक्ति कुडलिनी जागृत हो गई है। अहंकार न करें और ना ही अपने आप को बुद्धिमान समझिये शीतल, शान्त और विषय विकारों से रहित बनिये। आप अभ्यास द्वारा सिद्ध पुरुष बन सकते हैं।

(द्वारा कर्नल आर० के० लंगर
6/5 हाउसिंग बार्ड फलैटस
शास्त्री नगर
जम्मू तवी—180004)

हमारे सम्मानित कलाकार त्रिलोक कौल

यह हमारे लिए गर्व की बात है कि 1947 से हमारे कलाकारों ने तमाम हतोत्साहन के बावजूद कश्मीर में कला के विभिन्न क्षेत्रों में अपने योगदान से नाम भी कमाया और कला को जीवित भी रखा। नाटक, संगीत, साहित्य लेखन, नृत्य आदि कलाओं की ही तरह कश्मीर में चित्रकला को जीवन देने, चित्रकारों को संगठित करने, कश्मीर में भारतीय तथा विश्वचित्रकारिता के नये आयाम प्रचारित करने में जिन चित्रकारों का योगदान उल्लेखनीय है उनमें से श्री त्रिलोक कौल का नाम सर्वोपरि है। पिछले दिन हुई उनसे एक बातचीत से इस बहुआयामी और महान कलाकार से उनके जीवन तथा कृतित्व के बारे में कई बातों का पता चला, जिन पर आधारित एक संपूर्ण लेख हम मार्च '95 के अंक में दे रहे हैं। यहां यह बताना प्रासंगिक होगा कि 1947 में करीबी संबंधियों के (पाकिस्तानियों द्वारा) ज़िंदा जलाए जाने के बावजूद श्री त्रिलोक कौल ने स्थितप्रज्ञ होकर न केवल अपनी कला को उच्चकोटि की अभिव्यक्ति का सफल साधन बनाया, बल्कि हमारे दूसरे सम्माननीय चित्रकार (स्व०) सोमनाथ भट्ट के सहयोग से कश्मीर में पहली बार चित्रकार—आंदोलन चलाया और प्रसिद्ध चित्रकारों बेंद्रे हुसेन, रज़ा, सूज़ा, आदि से सम्पर्क स्थापित कर के कश्मीर की चित्रकला को समकालीन स्तरीय कला के समकक्ष ला खड़ा किया। श्री त्रिलोक कौल रंगयोजना तथा आकार-नियोजन के क्षेत्र में अपनी किस्म के अकेले कश्मीरी कलाकार हैं, जिनको भारतीय चित्रकला के बड़ौदा—निकाय से जोड़ कर देशव्यापी प्रतिष्ठा दी जाती है। हमारी कामना है कि वे दीर्घायु हों!

मोहनी रैना

मां, हमें कब बुलाओगी ?

इन पहाड़ियों के नीचे फैली हुई दूब पर पांव रखते ही ऐसा लगता था मानो हरी हरी मखमल पर पांव रखे हैं, और इस पर मोतियों के समान ओस पांव चूमने को लालायित हों। वाह! क्या आनन्द आता था। चारों तरफ खुला आसमान, दूर दूर तक फैली हरी मखमली घास, नदी, नाले और सुन्दर प्याले के समान वह प्यारी वादी और इसके पहरेदार पहाड़ और पहाड़ियां। नीला आसमान विलक्षण बादलों की छटा लेकर। शायद ही ऐसे बादलों का रंग रूप कहीं और देखने को मिलता हो ? दूधिया गुच्छे के गुच्छे अंगूरों की तरह अमृत रस से भरा हुआ। अब टपका तब टपका। ऊंचे ऊंचे सफेदे के पेड़, सिर हिला हिला कर कह रहे हो, हम ही तो हैं इस चमन के रखवाले। हम अपनी तरफ किसी भी पराये पुरुष या स्त्री की आंख उठाकर नहीं देखने देंगे। फलों की शाखें झूम झूम कर नई नवेली दुल्हन की तरह सजी हुई धरती के पांव छू छू कर मानो कह रही हों, मां हम तुम्हारी सेवा करेंगे, तुम्हें हर प्रकार सुख देंगे, बस मां आपका आशीर्वाद चाहिए। नन्ही नन्ही कलियां क्यारियों में मुस्कराती अठखेलियां करती हुई कह रही हों। हम इस चमन को हमेशा ही इसी तरह आबाद और खुश रखेंगे। झरनों की कल कल, नदियां और नालों की उतंग लहरें बार बार यही एहसास दिलाती रही, जब तक हम हैं, हमारा चमन, बस हमारा है।

मन्दिरों की रुनझुन बजती घंटियां मस्जिदों की अज़ान प्रेमधारा बहाती रही और लोग उस प्रेम धारा में नहाते रहे। यह सिलसिला बस यूं ही चलता आ रहा था। एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, सदियों से सदियों तक। हाय रे मेरे वतन, मैं तुझ पे कुरबान। तुमें तो सारे वायदे भूल गए, यह क्या किया तुम ने ? पहरेदार पहाड़ दानव बन गए। हरी दूबा और ओस शोलों में बदल गए। आसमान ने आंखें फेर लीं और सफेदे के ऊंचे ऊंचे पेड़ सुनसान और डरावने लगने लगे। मां, यह रूप परिवर्तन क्यों ? मीठे रस भरे फल कड़ुवे क्यों लगने लगे ? उस आशीर्वाद का क्या हुआ ? जो तुम ने अपने बच्चों को आंचल में खुछाते हुए दिया था। फलों फूलों और चमन को आबाद करो। मन्दिरों और मस्जिदों की प्रेमधारा को खून की धारा में किसने बदल दिया और उसमें मां तुम्हारे सारे बबचे डूबने लगे। नदी नालों का कलरव, गोलियों और बारूद के नीचे दब कर रह गया। सौंदर्य की देवी चण्डिका बन कर चमन उजाड़ने पर क्यों उतारू हुई। कहीं किसी शैतान की नज़र तो नहीं लगी ? हमें उस शैतान ने घर से बेघर क्यों किया ? हमने उस का क्या बिगाड़ा था। हाय! सदियों के भाईचारे पर पानी फेर दिया। क्यों मां! तुम्हें कभी हमारी याद नहीं आती है ? तुम हमें कभी उन क्यारियों में ढूंढने तो नहीं निकलती! हाँ, जिनको हजारों सालों से हमने आबाद किया था। कभी तुम यह तो नहीं सोचते हो। इस चमन में और भी रंग बिरंगे फूल और कलियां थीं, वे कहां गए ? किधर भटक रहे हैं ? कभी मन नहीं करता, ज़रा देख तो लूं उनका क्या हाल है ? कितने मुरझा गए, कितने झुलस गये कड़कती धूप में और कितने ही कुम्हला कर रह गये। बेबस दुखियों की पुकार बार बार यह कह रही है, माँ आंखें तरस गई हैं, तुझे देखने को। क्यों मां तुम हमें कभी वापिस नहीं बुलाओगी ? क्या तुम्हारे बच्चे तड़प-तड़प कर तेरी याद में समाप्त होंगे। क्या उनका सपना साकार नहीं होगा। बस अब यह ताण्डव समाप्त कर दो। अपना रूप सौंदर्य लौटा कर लाओ और चमन में अमन चाहिए। यह समझ में नहीं आता कि कब उस भाई चारे की प्रेमधारा फिर से हकीकत बनेगी। क्या हम इसी तरह राख के ढेर पर बैठकर तुम्हारे रूप सौंदर्य का सर्वनाश देखते रहेंगे। वह शांति, सुखचैन क्या कभी लौटेगा। यह नरसहार कब तक चलता रहेगा ? निर्णय नहीं कर पा रही हूं, सौंदर्य की देवी कहूं या......

□विमला रैना

'घबराहट'

हर रोज समाचार आते हैं।
रेडियो से, टी॰वी॰ से, अखबारों से।
दस मरे, बीस पकड़े गए, अनेक घायल हुए।
बार-बार मन घबरा जाता है इन खबरों से।।

इसने पकड़ा, उसने मारा, क्यों कर ऐसा होता है।
हाहाकार मची है, सभी सहमे से लगते हैं।
हर ओर डर छाया है, पूरब से, पश्चिम से, दक्षिण में ओर उत्तर से।
बार-बार मन घबरा जाता है इन खबरों से।

कुछ देख रहे खामोश तमाशा इन नज़ारों का।
और चाहते पृथ्वी पर हो सदा दृश्य ऐसे ही।
क्योंकि उनका व्यवसाय चल रहा है ऐसे ही ज़ोरों पर।
बार-बार मन घबरा जाता है इन खबरों से।।

क्या ऐसे दृश्य का समापन नहीं हो सकता है?
क्या राक्षस सदा संहार का आनंद लेते रहेंगे?
क्या सभी धर्म ग्रन्थ असफल हो गए समझाने में?
बार-बार मन घबरा जाता है इन खबरों से।।

आशा का कोई संदेश लिख लो ऐसा।
शोषकों का संहार सम्भव हो जिससे।
ऐसी खबरें कभी न हों सम्भव कि राक्षस पुनः जीवित हो गए हैं।
बार-बार मन घबरा जाता है इन खबरों से।।

आओ सब मिलकर एक जुट हो जाएं।
ताकि फिर से 'सतीसर 'कश्यप' का घर बन जाए।
हम सबके मन 'विमल' बनकर उस स्वर्ग को बचाए।
बार-बार क्या मन घबरा जाता है इन खबरों से।। ०००

□ लवली कुमारी रैना

यह कैसा तूफान हुआ !

गोली चली बारूद फटा ।
बहनों की इज्जत लुट गयी ।।
धरती का सीना लाल हुआ ।
यह कैसा तूफान हुआ ।।

मंदिरों की घण्टी रूठ गई ।
सन्तों की वाणी टूट गई ।।
भजनों की ध्वनि टूट गई ।
यह कैसा तूफान हुआ ।।

आतंक ने हमको आ घेरा ।
शांति ने ले ली तुरत विदा ।
मृतकों की बढ़ी बहुत संख्या ।
यह कैसा तूफान हुआ ।।

कुछ यहां रहे कुछ वहाँ रहे ।
कुछ यमराज को प्यारे हुए ।।
कुछ लोगों के शव बिखर गये ।
यह कैसा तूफान हुआ ।।

आंधी ने आकर घेर लिया ।
किरणों ने भी मुंह फेर लिया ।।
पानी भी रेत में समा गया ।
यह कैसा तूफान हुआ ।।

माता पुत्र से बिछड़ गई ।
पत्नी पति से ही दूर पड़ी ।।
शिशु को दूध की बूंद नहीं मिली ।
यह कैसा तूफान हुआ ।।

—नीना बंबरू

सब खो गया

क्या सोचा था क्या हो गया।
यहां आके सब कुछ खो गया॥

घर से निकले थे यही सोचकर।
यहां आके फरियाद करें सरकार से॥
सरकार खुद डर गई आंतकवाद से,
और हम सोचते ही रह गए
क्या सोचा था क्या हो गया।
यहां आके सब कुछ खो गया।

घर से निकले थे यही सोचकर।
यहां आके पढ़ेंगे बनेंगे इनसान॥
पर कश्मीर यूनिवर्सिटी बन गई हमारे लिए शमशान,
और हम सोचते ही रह गए,
क्या सोचा था, क्या हो गया।
यहां आके सब कुछ खो गया॥

घर से निकले थे यही सोचकर।
यहां आके ग्रैजुएशन करेंगे हम॥
पर फाइनल में ही ओवर-एज हो गए।
और हम सोचते ही रह गए॥
क्या सोचा था क्या हो गया।
यहां आके सब कुछ खो गया॥

विनती करती है नीना आप से।
नहीं डरो इनके कारनामों से॥
इनके कारनामों का क्या करूं बयान।
अब खत्म करती हूं यही पर अपनी दास्तान।

☐ सुनीता भान

नारी की पहचान

नारी तुम हो धन्य महान
तुम न खोना अपनी पहचान
नारी तुम हो धन्य महान
जिस घर में तेरा जन्म हुआ
वह घर तुम से ही स्वर्ग बना
ना खोना तुम अपनी पहचान
नारी तुम हो धन्य महान्
तुम तो ऐसा हीरा हो
तुम ललद्यद हो मीरा हो
तुम से भारत देश जगे
तुम हो पुरुषों से आगे
ना खोना अपनी पहचान
नारी तुम हो धन्य महान
गैरों को अपनाती हो
सेवा में निछावर होती हो
घर की चिन्ताएं मिटाती हो
सबका कल्याण ही चाहती हो
तुम तो हो बहुत महान
ना खोना अपनी पहचान
नारी तुम हो धन्य महान्
तुम ही किरण बेदी बनती
भारत को शक्तिमान बनाती
अनुराधा पोडवाल बनकर
सबको संगीत सुनाती हो
बनकर दौड़ में पी. टी. ऊषा
सब से प्रथम आती हो
तुम तो हो शक्तिवान
तुम ना खोना अपनी पहचान
कली की तरह तुम नाजुक हो
सागर की तरह तुम गहरी हो
फिर दहेज के बन्धन से
तुम इतना भला क्यों डरती हो
तुम में है ज्ञान का भंडार
तुम ना खोना अपनी पहचान
नारी तुम हो धन्य महान्
खुद को तुम मिटने ना देना
खुद को तुम गिरने ना देना
खुद को तुम बुलन्द करो
कि ईश्वर आकर तुम से पूछे
तेरी चाहत का करे सम्मान
यही है मेरा पैगाम
तुम ना खोना अपनी पहचान
नारी तुम हो धन्य महान्

(मौ० आ० सायं कालेज, जम्मू)

शाबाश ज्योति !

कशमीरी पंडित सभा अम्बफला, जम्मू तथा कश्यप समाचार" संपादक मण्डल की ओर से ज्योति रैना सुपुत्री डाक्टर बी० के० रैना (सर्वाल, जम्मू) को ए०आई०आई ए० (Associate Examination of Indian Institute of Architects) की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर बधाई। ज्योति रैना इस परीक्षा में पास होने वाली जम्मू कश्मीर प्रदेश की पहली छात्रा है। शाबाश ज्योति ! अपना, अपने परिवार तथा पंडित जाति का नाम ऊँचा करते रहो, हमारी शुभ कामनाएं तुम्हारे साथ हैं।

कश्यप समाचार (का'शुर बोग)

का'शुर परनुक लेखनुक त'रीकु'

का'शिरि आवाज़ु'

1. स्वर :

   अ'=च'र, म्य'च़। आ'=आ'र, नसां, चा'र। उ'=बु', च़ु', बतु' ऊ=ऊ'ठ्युम, तू'र, कू'त्य्।
   ए'=मे', चे', बे'ह। ओ'=ओ'ड, नो'ट। —य्=तीत्य्, म्या'न्य्, आ'द्य्। —व=त्वश, स्वच्छ, क्वस।

2. व्यंजन :

   क, ख, ग, च, च़, छ, छ़, ज, ज़, ट, ठ, त, थ, द, न, प, फ, ब, म, य, र, ल, व, श, स, ह, त्र।

3. हिंदीयिक्य् व्यंजन घ, झ, ढ, ध, भ, ण, ष, क्ष, ज्ञ करव अ'स्य् सिरिफ नावन (व्यखतीवाचक संग्यायन मंज़ इस्तिमाल) हिंदीयिक्य् अलावु' स्वर ऐ, औ ऋ ति यिथय पा'ठ्य्। मसलन, घनश्याम कृष्ण, ढाका, धनवती, नारायण, ज्ञानेश्वर।

संपादकी

सा'न्य् शुर्य़ हृयकन ना क'रिथ ?

प'तिमि र्‌यतु'किस अंकस मंज़ को'र असि "लीला संघा" हस मुतलिक अख ल्वकुट खबरनामु' पेश। असि ल्यूख तथ मंज़ ज़ि सु प्रोग्राम करन वाल्यन (पनुन कश्मीर वाल्यन) ओस नज़रि तल ज़ि पनु'न्यन ल'डकन ल'डकियन याने पनु'निस जवान नसलस मंज़ करु'हा'व पनु'नि संगीत'कि मीरासुक ज़्वन पा'दु'। दरअसल छु वारयाहु' कालु' प्यठु' सान्यन लेखकन तु' बुद्धिवादियन ये'मि कथि हुंद आवास गन्योमुत ज़ि अ'स्य् ग'छ्य् नु' पनु'न्यव मूलव निशि ज़्यादु' छ्यनु'न्य्। पतुन्य् मूल प्रज़ना'विथ पनु'न्य् प्रज़नथ का'यिम करु'नु'च ज़बर्दस कांख्या छि पा'दु' गा'मु'च़। 'लीला संघा' हस मंज़ दितुख ज़ोर संगीतस प्यठ, मगर संगीतु'य योत पछानुन छनु' सा'न्य् का'म। संगीत छु सानि कल्चरल प्रज़नथुक अख पो'ख। बे'यि ति छि वार्याह प'ख्य्। मसलन का'शिर्य रसु'म, रीचु', साहित्य तु' ज़बान। रसु'म रीचु' छि अ'स्य् बहरहाल पालान। अगर नय पालव खबर बदशगून मा गछ़ि। सिरिफ प्रथा पालनु' खा'तरू'। बल्कि यिमन री्चन मंज़ थि कें्छाह हावबावुक तु' बे'यिस रोब त्रावनुक अनसर छु सु छि अ'स्य् दो'हु' ख्वतु' दो'हु' बडावान। यि कें्छाह स्वंदर, सादु', ख्वशयिवुन रोज़वुन तु' री्चनहुंद असली तत्व छु, सु छि अ'स्य् त्रावान या तथ छिनु' ज़्यादु' अहमियध दिवान। हालांकि यि वनुन छु बडु' मुश्किल ज़ि कथ री्च़ मंज़ क्याह छु स्वंदर तु' रछनस लायख तु' क्याह छु त्रावनस लायख,

तोति हे'कि मनोश यि वुछिथ ज़ि क्याह छु लगु'हार तु' क्याह छु फज़ूल। खा'र यि बहस त्रावव अ'स्य् फ़िलहाल ये'ती। बल्कि आ'स्य् यछ़व ज़ि सा'न्य् लेखन परन वा'ल्य् सोचन समजन वा'ल्य् लेखन अथ प्यठ पनुन्य् पनुन्य् खयाल।

वुन्य्किस तुलहा'व अ'स्य का'शिरि ज़बा'न्य हुंद सवाल। असि वोत यि वार्याह काल बनान ज़ि हे सानि प्रज़नतुक हसा' छु दरअसल अकोय सही निशानु'--स्व ग'यि सा'न्य् ज़बान। अगर नु' अ'स्य् का'शुर बोलव अ'स्य् किथु' क'न्य् वनव ज़ि अ'स्य् छि का'शिर्य्? अगर नु' अ'स्य् पनुन्य् शुर्य का'शुर हे'छिनावोख बोलुन तिम क्वसु' पछान करन का'यिम? पानस धि व'निथ ज़ि 'हम कश्मीरी पंडित हैं' छुनु' का'फी। हिंदी बोलु' नावु'न्य् तु' स'ही हिंदी परनावु'न्य् लेखनाक'न्य् छु ज़रूरी मगर सा'न्य् शुर्य् अगर नु' का'शिर्य् पा'ठ्य कथु'य क'रिथ ह्यकन, तिम कति करन का'शिरिस अदबी मीरासस, ललद्ये'दि र्‌वपु' भवानि, परमानंदस तु' कृष्ण जुव राज़दानस कदु'र? तिमन क्याह तरि फिकरि नवग्ये'ह तु' सोंत, हेरथ तु' शिशुर, वीग्य् वच़ुन तु' खे'चि् मावस क्याह अहमियथ छि थवान सा'न्य जातीय शख्सियथ थुनरस मंज़? अगर नु' सा'न्य् शुर्य कुनि जातीय व्यक्तित्वस सू'त्य् पनुन पान जूडिथ ह्यकन तिम मा गछ़न हिंदोस्तान किस तुफानलद समंदरस म़ज़ यीरू'? का'शुर बूलिथु'य हु'यकव अ'स्य् का'शिरिस माहोलस सू'त्य संबंद का'यिम थ'विथ। का'शुर बोलनु' सुत्य् मछ़व नु' अ'स्य् हिंदी या अंगराज्य् बोलनस मंज़ कां'सि निश पथ। यि छु एजुकेशिनस्टव (educationists) मोनमुत ज़ि ये'मिस माजि ज़्यवि प्यठ ठीक अधिकार आसि सुय हे' कि बाकय ज़बा'न्य् हे'छिथ। बे'यि छि असि ब्याख कथ ति याद थवुन्य् ज़ि शुरिस छि अकी वक्तु' चोर चोर ज़बा'न्य् हे छनुक मादु' आसान। अख ज़बान छनु' दो'यिमि ज़बा'न्य् हु'दिश कूम'तस प्यठ हे'छिनावन्य्। गरि बोलोस सिरिफ का'शुर। स्कूलु' हे'कि सु हिंदी तु' अंगरीज़्य् जान पा'ठ्य हे'छिथ। असि ति को'र पनु'नि विज़ि यी। सा'न्य् शुर्य् कोनु' ह्यकन यी क'रिथ?

●

नई क़लम

(इस स्तंभ में हम अपने नवयुवक लेखकों लेखिकाओं की रचनाएं दिया करेंगे। प्रस्तुत अंक में कुछ कविताएं दी जा रही हैं। ये कविताएं पिछले नवंबर में मौलाना आज़ाद स्मारक कालेज के एक कवि सम्मेलन में विद्यार्थियों ने पढ़ सुनाईं। जाने अनजाने सब ने कश्मीर छूट जाने और विस्थापन का दर्द व्यक्त किया। इस कवि सम्मेलन का उल्लेख हम पहले कर चुके हैं।)

दुर्गा दुर्गति नाशनी—III

(ग्वडनिक्यन द्वन कु'स्तन मंज़ क'र मालमोही सा'बन दीवी याने शक्ती हुं'द्यन मुख्तलिफ रूपन हुं'ज़ व्यछनय। ग्वडनिकिस कु'स्तस मंज़ क'रूख वखनय ज़ि असि का'शिर्यन क्याह् छि दुर्गा पूज़ायि हुं'ज़ अहमियथ। दो'यिमिस हिसस मंज़ दितुख हा'विथ ज़ि का'शिर्यन हुंद शक्ती हुंद तसव्वुर छु तांत्रिक आ'सिथ ति बुनिया'दी पुरानन प्यठु'य द'रिथ, छु अमापो'ज़ अथ तसव्वुरस छु वहरहाल अलामती माने दरकार।)

तन्त्रन मंज़ छे' शक्ती हु'न्ज़ु द'ह् महा विद्यायि मानु'नु' आमु'च्'। यिमन मंज़ छे' का'ली वक्तु'च अलामथ (व्यसु) सौर्य्सु'य गालान छे'। तारा छे' स्व स्वनु'होर्य् गर्भ ये'मि मंजु' जगत व्वतु'लान छुतु' यि गर्भ गव ख़ला (space)। षोडषी शुड़ासी छु लफ़्ज़ी मतलब शुराह व'रिश, यि छे', प्वख्तु'गी यावुन तु' बरपूर आसु'नु'च अलामथ। भवा'नी श्वरी छे मादी ताक्तन हु'न्ज़ अका'सी करान। भैरवी छे' तिमन खा'हिशन हु'न्ज़ तमसील यिमु' इन्सानस आ'खरस तबा'ही तु' मोतस कुन निवान छे'। छिन्ना मस्ता छे' स्व दीवी य्वसु' पानय पनुन रथ चवान छे'। यि छु अमि कथि हुन्द अलाम'ती इज़्हार ज़ि यि तख़लीकी दुनियाह, युस बज़ाति ख्वत अख शक्ती रूफ़ छु, छु फनय बरपूर तु' ख्वद क'फ़ील (self sustaining) तु'अथ मंज़ छु अ'किस तरतीबस तहत तबा'ही तु' ता'मीरुक ओ'सूल का'म करान। त्वहि आसि याद ज़ि यि तरतीब, तबा'ही तु' ता'मीर छि बज़ाति ख्वद शक्ती हु'न्ध्य ब्यो'न ब्यो'न पहलू। धूमाव'ती छे' बुनलि मंजु' तखलीकु'च अलामत तु' बगला छे' ज़िद, हसद, वा'र नफरत तु' ज़ुलमु'च तमसील। हिन्दोस्तानुक सारिवु'य ख्वतु' बो'ड तान्त्रिक डाक्टर नारायन दत्त श्रीमाली छु अ'किस जायि वनान ज़ि हकूमति अम्रीकहन ओस तस समन्दरी फोजकिस अ'किस ल्वकटिस हिसस "बंगला साधना" हे'छनावनु' खा'तरु' वो'नमुत युथ तिमन निशानु' बिल्कुल स्यो'द याने पूरू' ग्वक्तस प्यठ आसि यिमु' पा'ठ्य क्वलु'टूंच बे'शूंक्य् पा'ठय गाडि पानि मंज़ु' खा'रिथ निवान छु। (शायद आसि यि कथ प'ज़ु'य तिक्याज़ि अम्रीका छुनु' हिन्दुस्तान यौति से'क्यूलज़िम भारतीय तहज़ीब, सोंच, संस्कार तु' कलचर बर्बाद करनुक नाव छु ति छु पतंजली सुन्द योगदर्शन वारयाहन यूनिवर्सिटियन हु'न्दिस कोर्सस मंज तु' शायद असि योगानन्दन अ'किस यूगी सुन्ज़ "आत्मु' कथा" वुनि ति सो'कूलन मंज़ परनावनु' यिवान। मातंगी छे' बरपूर बलु'च अका'सी केरान तु' कमला छे' खा'लिस शो'वूरु'च अलामत यथ पम्पोशिक्य् पाठ्य् लागन छुनु'।

दुर्गा छे' शक्ती हुन्द अहम तरीन रूप। दीवी पुरान तु' मार्कांडे पुरान छि अ'म्युसुन्द वरनन करान, तु' "दुर्गा सप्तशती" य्व सु' मवादु' र'ग्य् "मार्कंडेय पुरानस" का'फी नखु' छे', छे' सा'र्यसु'द हिन्दुस्तानस म'ज़ दुर्गा पूज़ा तु' व्यपासनाधि प्यठ अख दस्तावेज़ी ह'स्य्यत थवान। अम्युक अख अख लफ़्ज़ छु अख अख ताकतवर मन्त्र मानु'नु आमुत तु' का'शिर्यन तन्त्र मन्त्रन तु' दीवी पूज़ायि प्यठ छु अम्युक टाकारु' असर। का'शर्यव प'न्डितव क'र कूशिश पनुन अनु'हार अलग थवनु'च मगर बीज़' अक्षर घाने ब्घा'ल्य् फ ल्य् छि कुनी तिक्याज़ि यिम आ'स्य् मार्कंडेयस मुता'बिक ब्रमहन तु' शिवागमनु' मुता'बिक शिवन व'न्य्मु'त्य्। दुर्गा लफ़्ज़स छु अख मतलब घुस ज़ानुन मुश्किल छु। चूं कि दुर्गा छे' पारब'ती हुन्ज़ सारिवु'य ख्वतु' सरस शक्ती अमिकिन्य् छे'नु' यि र'ज़ु'वु'न्य् सहल। मगर बह'स्य्यति मा'ज छे' पनु'न्यन संतानन रछान। अवय छे' पंचस्तवी वनान :—

ही मूड़ु' क्याजि छुख वे फा'यदु' तपु' किन्य् पनु'निस शरीरस तकलीफ दिवान।
य'गनि किन्य्, दानु' किन्य, बजि दक्षिनायि किन्य, क्याजि छुख गरु' पनुन खोलीं करान।
गछ शरन माजि शारिकायि प्राव ब'खती, हे' करुन त'म्यसुन्द पादि सीवन।
अदु' वुछ यिमन द्वखन क्यथु' न्यवारी स्ब अमर्यतु' हुंदि प्रवाह' सूत्य् जन ॥
(3-18—तर्जमु'—सराफ़)

यिहय दुर्गा छे' शिवु' सु'न्ज़ यूगु' ने'न्द्रा ये'मि मंजु' ज़गत व्वपदान तु' यथ मंज़ लय सपदान छु, अमि ल्यहाज़ु' छे' दुर्गा रचना, त'हरीक तु' हरकत, म'छ़िज, मा'र्य'म'न्ज मगर सू'ती छे' समु'हार करन वाजेन्य्। दुर्गा छे' महिशासुरं मर्दनी याने स्व ये'मि महिशासुर मोर तु' यि छु पारव'ती हुन्द सु रूप यवसु' जन त'मिस अन्दर ब्रह्मा, विष्णु तु' शिव सु'न्ज़न शक्तियन हु'न्ज़ अलाम'थ छें', यिहय छें' शुम्भ तु' निशुम्भ दू'तन हु'न्ज मारन वाजेन्य् तु' अ'थ्य् रू'पस मंज़ द्रायि का'ली अ'म्य् सु'न्दि ड्यकु' म'न्जु' तमि मोर चन्ड़ तु'म्वंड तु' अवय रूद अ'मिस चामुंडा या चं'ड़ी नाव। दुर्गायि छु विन्धु वासिनी ति नाव तिक्याजि यि छे' आम पा'ठ्य पहाडन प्यठ रोज़ान तु' यि ति छे' अ'म्य् सु'न्दि वजरु'च तु' थज़रु'च अलामत (यि छे' हा'रा'नी हुन्ज़ कथ ज़ि सोम देव छुनु' पनु'निस "कथा सरित सागरस" मंज़ (न'विम स'दी) दुर्गायि तु' पर्बतस काँह तोलुक हावान। त'म्य् सु'न्ज़ दुर्गा छे' आम पा'ठ्य् विन्ध्याचलस मंज़ रोज़ान)

अकि रे' वाय'च मुताबिक ये'लि दुर्गा क'शीरि आयि, का'शिर्य् प'डित आय अ'मिस बुथि तु' ज़ारु' पारु' क'रिथ वो'नहस "मही माता" अ'स्य छि नादार तु' चे' ब'ली दिन्य् छुनु' सानि खा'तरु' मुमकिन। असि निश छु फ़कत द्वदु'क़तरु' युस चे' लोलु' सान पेश छुय, शक्ती ग'यि ख्वश तु' वो'नु'नख—"मे'छु तुहुन्द राग तु' मे' छु तुहुन्द द्वदु' कतरु' तु' खिरु' प्यू'तुयस्यठा।' अवय छि अ'मिस राज्ञा (रा'गिन्या) तु' खीर बवा'नी वनान। यि कथ छे' वनु'न्य् लायक़ ज़ि स्वामी विवेकानन्दस द्युत' पो'तुस आतम ज्ञान अमी माजि रा'ज्ञायि तु' सा'मी जी सुन्द तुलु'मुल गछ़ुन छु त'हु'न्ज़ि ज़िन्दगी हुन्द त्रे'युम अह'म वाकु' ये'म्य् तिहु'न्ज़ ज़िन्दगी पूरु' पाठ्य् बदु'ला'व। ग्वड़निक्य् ज़ु'वाकु' छि राम कृष्णस समखुन तु' अम्रीका गछ़ुन।

यो'दवय काशिर्यन दुर्गा तु' रा'ज्ञा रूपस सूत्य' ज्यादु'लगाव छु मगर तिमन छु एहसास ओसमुत ज़ि त्रे'यव ग्वनव मुता'बिक छि दुर्गायि त्रे'रूप--सात्वी महासरस्वती, राजसी महालक्ष्मी तु' तामसी महाकाली—तन्त्रस मंज़ आ'सनु' पूज़ा दुर्गायि हुन्ज़ि मूर्ति या शकलि सजदान—शक्ती पूज़ा आ'स शक्ती मुना'सिवतु' किन्य् शक्ती च'क्रस सपदान—दुर्गा चक्रु'च हना वज़ाहत छे' ज़ो'रूरी। यि आव ब्रोंठु'य वननु' ज़ि मादु' छु अ'किस जायि सादु', बे'यिस जायि हरक'च् मंज़ मन तु' बे'यिस जायि ज़िन्दगी। अ'थ्य् वनव तमोगुण, रजोगुण, तु' सतोगुण—तमो गुण गव साईंसी ज़वा'न्य मज़ 'Inertia' रजोगुण गव तगैर तु' हरकत (Motion) तु' सतोगुण गव तरतीवतु' तसलसुल 'Viration'। तमो, रजो तु' सतो गव ठोस, मायि तु' गैस। यिथ्र ति बाकय वसु'फ मादस मंज़ आसान छि तिम छि यिमन त्रन हुं'ज़ तरतीब बदलावनु' किन्य् पा'दु' सपदान।

शिव छु न्यरगुण याने ज़ा'हिरी सिफ़तव रो'स। यि छु पनुनि असु'ल हालु'च् मंज़ सत् चित् तु' आनन्द तु' ये'लि अथ प्रकृती हुन्द अथुवास छु सपदान तु' ज़गत छु बारसस यिवान। अ'थ्य छि दुर्गा च'क्र ति वनान यथ मंज़ अष्टु'दल याने आ'ठ भैरव तु' स्यमन्ज़स शुन्य आसान छु।
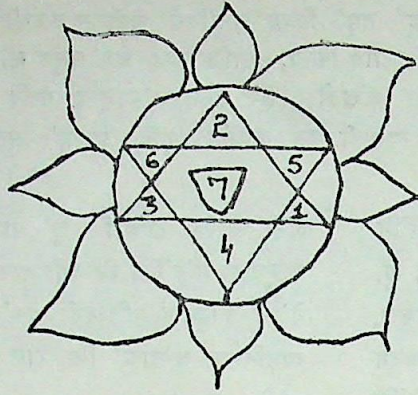
1. सत्
2. चित्
3. आनन्द
4. तमोगुण
5. रजोगुण
6. सतोगुण
7. शून्य

(यि च़'क्र छुनु' मुकमल दुर्गा च़'क्र तिक्याज़ि अथ छे' वारयाह अलाम'च़ । दा'यिरु तु' चकोर चेर, यि च़'क्र पूरु' पा'ठ्य ये'त्यन द्युन वास्यावनु' मे' जान)

शिव तु' शक्ती हुन्द मिलु'च़ार छु ब्रह्मांड बनावान ।

का'शर्यन बटु'नु'य योत नु का'शर्यन मुसलमान सूफ़ी शायिरन ति छे' शक्ती रंजु'नावान । तिमित छि पनु'नि आयि अ'मिस लोल बरान । बु' दिमु' सिर्फ़ त्रे' मिसालु' :—

(1) या छख चु' पदमा'य् शहसवार अबरे समन्दर आशकार
सथ समन्दर जोलि ल'द्य्थख ला'ग्य्थय ग्वसा'निये— (अहमद बटु'वा'यँ)

(2) सा'री सामान' ह्'यथ जानानस ।
अमि नाज़्लि सा'र को'र पानस— (अहद परे)

(3) माहरम सपु'द्य् गाटा'ली, वे'ह नय कुनि छूय महाका'ली ।
विज़ि-विज़ि दरमस चोनुय व्यूह, पर ओंमसू, पर ओंमसू ।। (शाह गफ़ूर)

महिषासुर छु च़कि अख वनु'वा'स्य् सांड युस अमि कथि हु न्ज़ अलामत छु ज़ि यस व'छ न'र त'म्य् खे'यि लूकु'हुं'ज ल'र । महि सुरस पूश्यनु अलग-अलग दीवता तिक्याज़ि तिमन आ'स कहन गाव रा'वमु'च़, मगर ये'लि तिहुन्द सोरुय साम्ररथ अ'किस न्वक्तस प्यठ मरकूज़ सपुद तिमव को'र यि जंगल कोनून खत्म तु' महिषासुर आव अमी न्वक्तु, द'स्य् मारनु' । यो'ह्य न्वक्तु आ'स दुर्गा तु' क्याज़ि ज़ा'न्य् का'शिर्यव बटव टा'ठ तिक्याज़ि तिमन प्यव हमेशि चंडन तु' म्वंडन सू'त्य वासतु' । शायद आयि अवय

1994 ई० मेज़ अन्दर दिलि मंज़ का'शिर्यन बटन हुंज़ि बैंन उल अकदा'मी कानफ़्रन्सि हुं'दिस मोकस प्यठ दुर्गायि स्व शकु'ल दिनु' य्वसु' कें'ह फ'नी सुकुम आ'सिथ ति अज़कालुकिस अनि ग'टिस मेज़ का'शि-रिस बटस अख गाश हावान छे' अ'म्य सु'य माजि हुंद दामानु' छु रा'छदर । जौ'रूरथ छै अमि कथि हुं'ज़ ज़ि पनुन सोरुय सामरथ करव अ'स्य् अ'म्य्सु'य माजि प्यठ मरकूज़ युथ यि महाका'ली ब'निथ च़'डन तु' म्वंडन, महिषा सुरन तु' रक्तुबीज़न रतस दाम गंडिथ सा'र्यसु'य जगतस स्वख तु' सम्पदा दियि ।

—रघुनाथ भट्ट बंडपूर

"शारदा मातायि कुन शिकवु"

ही जगथ अम्बा मे' वनतम चोन मकसद आ'खुर छु क्याह, ।
पूज़ करू' करु'वु'न्य् व'खु'त्य् ज़न क्याजि क'पंथखसा'री तबाह ।।
क्याज़ि ला'ग्य्थख वावु'गलिनु'य क्याज़ि को'रथख आ'ल्य् नाश ।
क्याज़ि बीठु'ख शो'गिथ जन क्याज़ि क'यंथख सा'री हताश ।।
आयि बीमु' किन्य् ख'त्य् को'हन बालन बिचा'र्य ।
को'रुख ख्यव यलग़ार तु' मा'रिख चा'र्य् चा'र्य् ।
दम संबोलुख तु' म'शरोनुख सिकंदर बुतशिकन ।
खाकि वे'हना'विख सु याम देश सोन आलोद गव ।।
रज आ'सिथ पनुन सा'रीं बन्यामु'त्य् दास ही ।
दम गुजा'री आ'स सपदान बेक'सी हुं'न्ज़ज़िन्दगी ।।
मोन पापव सू'त्य ब'रिथ आ'स नाव सा'न्य् ।
माफ करुन मा'ज ! आ'स ना का'म चा'न्य् ।।
को'सि मोरुख लोलु' पो'थुर को'सि मोरुख लोलु' लोन ।
राज़ु' कोर्यन ले'तु'र ला'जिख क्याह ग्वहय छा न्याय चोन ।।
तापु' क्रायन मंज़ नचान हालि हा'रान दरब'दर ।
को'त गछवव्वन्य् क्याह करव हालु'ची कस क्याह खबर ।।
देश ब'खतीं मेलि डंड आ'स मा का'सी खबर ।
डो'ख छु देशुक सारिनु'य आ'स त'थी प्यठ नज़र ।।
हालि खवद सा'री छि मस्त कस सना सोनुय खयाल ।
चा'न्य् द्रायी चानि रो'स्तुय असि नु' का'सी हुंद मलाल ।।
कर दया व्वन्य् हाव य्वखती मुश्किलन सान्यन दि ध्यान ।
कनु'द'र करु'न्य् ठीक गव, कन कडुन मा छु जान ।।
सो'तु' का'ल्य् हरुद लो'गमुत बारि छुय गो'यना कनन ।
पो'ज़ छु वो'नमुत सखतियन मंज़ स्वन तिं छा सरतल बनन ।।
रोजु'खय ब्रो'हं कुन ति शो'ग्य्थु'य खो'ट यि सौदा द्रो'ग पे'यी ।
ज्यव दंदस तल थ'विथ पानु' पशतावुन पे'यी ।।
गंड च्' तागर थो'द च्'व्वथ हाव व्वन्य् पनु'नुय कमाल ।
खानु' आबा'दी चु'कर ज्ञाव व्वन्य् सोरूय मलाल ।।
रूठमुत र्'वगु' जुव छु सोज़ान गुल्य् गं'ड्थि च्'य कुन प्रणाम ।
युथनु' मा'जी च्'ख ख'सी माजि प्यठ दसगाह बनान ।।

●

□ सतीश कौल

नीकी छि नीकी

प्रथ अनिग'टिस छु प्रकाश ठ्वलि, प्रथरा'च् छु द्वह मुकाबलस, प्रथ हर्दस छु सोंथ बुथि, प्रथ शामस छु सुबह गा'शरावान, प्रथ य'ज़ीदस छु हुसैन कलु' दगनस, प्रथ कंसस छु कृष्ण मदु' वालनस तु' प्रथ रावनस छु राम, राम करनस तु' नाबूद करनस प्यठ हो'ल गं'डिथ तु' कम्बर ग'डिथ आसान...।

अहंकार तु' मद छु इनसानस असमानु' प्यठु' प'थरिस प्यठ वालान तु' मे'चि स'त्य मिलु'वान—पतु' यो'दवय छ्ल छिदु'र तु' कपट मनस मंज़ आसि ते'लि छु सु अं'दरी अं'दरी अ'थरिहुं'घ् पा'ठ्य् अ'हंदिस दिलस द्वतु' द्वतु'तु' त्वयुन क'रिथ थवान अं'दु'र्य गंड तु' दु'यि तु ग्रनायि हुज़ जलु'र्य ज़ा'ज छे' अ'मिस अं'दरी कूरान—अज़खु'निस नज़र बन्द—रु'च्र गव युस ये'छि परस तु' तस ये'छि गरस। कथ छे' इशारन मंज़ व'निथ ति वातान तस नीकी हु'न्दिस मुजस्मस श्री राम चन्द्र जियस प्यठ—नीकी तु' ओ'सूल तु' पितृ ब'ख्ती हुन्द थज़र क्या हे'कि अमि ख्वतु' आ'सिथ—मा'ल्य् (राज दशरथ राज़न) छु करतान्य् वे'शूक्य् पा'ठ्य् रानी केकी ख्वश ग'छिथ वरदान द्युतमुत—दपान छिना पर ब्वदि विनाशाये—रानी कैकेई छे' मंथरायि हुं'ज़ि अकलि ग'छिथ ति करान यिनु' स्वपनस मंज़ ति कांह सू'चिथ हे'किहे—स्व छे' रामच'न्द्रस तु' डम्ब्रिकिस ने'चिविस भरतस मंज़ व्यन छांडान—तु' तस छु नेखपूर अचान त' स्व छे' राम' च'न्द्रस च्वदु'हन व'र्य'यन वनवास तु' भरतस राजग'द्य् दिन'व्य् ज़ु' वरदान राजु'दशरथस द्यावान—राजु'दशरथ छु अमी हे हु' अ'न्दरी गलान त स्वर्गस गछान—राम युछतोन सुछु पनु'नि कवलु'च म'र्यादा तु पज़र बराब्र थवनु' ख्'ातरू' मा'ल्य्सुन्द यज़थ तु' वादु' बराबर करनु' बापथ पा'न्य् पान वनवास गछ्नु'कित्य् तयार सपदान तस छुन रछ्ति द्वख सपदान सीता माता तु' लक्ष्मण जी छि तस सू'त्य् गछ्नु' ख्'ातरु' तयार गछ्ान—यिमन छु ये'मिकथि हुन्द सख खयाल आसान—

> रघुकुल रीति सदा चली आई ।
> प्राण जाए पर वचन न जाई ।।

अर्थात्—रघुक्वलु'च रीथ छि हमेशिप्यठु' पकान आमु'च् ज़ि प्रान ग'छि्न, मगर वच्ु'न गछि्नु' बदलुन—नी तोन।

व्वन्य् भरत—सुति अख-हख शिनास—त'म्य् थो'वराज ताज होकुन, पानु' रूद पनु'न्य् पत्नी ह्यथ राम जियस प्रारान तिथय पा'ठ्य् राज़सी निशि विमुख तु' दासु' सु'न्य् पा'ठ्य् राज संवालान—तु' रामु'च्'न्द्र रूद वनु'वनु' फेरान कम कम द्वख तु' मुसीबथ व्यतरावान—मगर तस ओस नु' राजसी हुन्द या यिमन तकलीफन हुंद रछ्ति गम—

कथ छि बदल ज़ि बगवान रामस कमन कमन हु'न्ज़ि तपस्यायि हुन्द फल द्युन ओस—हनुमान स ह्यु'व ब'खु'त्य् या विभीषनस ह्यु'व ब'खु'त्य् कति तु' कियु' क'न्य् तरहन ब्वसरू' अपोर—शबरी कति मेलि हे दर्शुन तु' मजु'वुछ कुछ ब्रे'यि कति ख्याविहे स्व राम जियस—यीत्य् बान्दर-ज़ामवन्त—तु' सुग्रीव कति प्राविहे गथ—

नीकी ग'यि ल'क्ष्मण जी सु'ज़ नियथ तु' ज़िठिस बा'यिस तु' ब'यकाकनि हु'न्ज़ ब'ख्ती—पज़रस साथ

द्युन कति यियि हे बारसस—अेज्य्-क्यन बायन कति वसु'हन दूरदर्शनस प्यठ रामायण वुछान वुछान अ'श फे'र्य—सीता मातायि हुन्द वरदाश तु' रामजियस सू'त्य् सू'त्य् रूज़िथ पनुन पतिव्रता दरू'म पालुन—रावनस हिविस बलवान राखिसस निश रूज़िथ ति पनु'क्सि सतस प्यठ बराबर रोज़न छे' सानि खा'तरू' मिसाल—

रावुन मा'रिथ तु' का'तिहन तपस्वीयन जटायु, काक भुशंड़ी तु' बे'यन बे'यन ब'खत्यन व्वदार क'रिथ चनु'नि कर्तव्युक सो'बूथ द्युन छु असि लूकन हुन्दि खा'तरू' सबक़—पनु'विस सतस प्यठ द'रिथ रोजनस क्याह् लाब तु' प्वन्य् छु मेलान छु हे'छुन लायख—

ग्रं'ज़ र'स्य्त्यन ब'खत्यन प्यठ दया करनु' खा'तरु' ओस राम जियस ज़न्म दारुन—ति—क्याज़ि राज़ु'दशरथ ओस बोड बारू' दर्मातिमा राजु' यसनिश वगवान राम ज़नु'म ह्यवान छु—राम जियिन्य् यि लीला—शंकर सुन्द दनुश फुटरावुन छु तहंज़ि शख्ती हुन्द सो'बूथ—त्रे'शवु'नी माजन हुन्द ह्युवुय यज़थ तु' मान करून छु सु ओ'सूल तु' स्व नीकीयथ रछि पज़न करनि—बायन हुन्द श्रे'ह तु' बा'य बरा'दरी तु हख शिना'सी कुनये'लि वुछव तु' ते'लि रोज़िनु' काँह दु'य तु दो'गिन्यार वुन्यवयन ये'लि असि बड़ि खोतु' बो'ड़ वे'खीफ आव तु' का'शिर्य बटु फीर्य् चकि वे'गर ग'छिथ सा'र्य् सु'य दीशस मंज़ शरणार्थी वनेयि—वुम्बरन तु' वा'खन हुज़ वरासथ तु वा'सि सो'म्बरोवमुत मालु' जादाद त्रा'विथ ज़ुवु' लरज़ु' च़'लिथ आयि तु' वुन्य्क्यन ति ये'लि नु' वोय बा'य सु'न्ज़कल थवि—अख अ'किस पलज़ि तु अथु'रो'ट करि—पनु'नि दर्मु'च रा'छ करि ते'लि छे'नु' नाव डुबनस काँह ता'र—का'शिर्यन बटन छु क्चटम्बु' कुनुय—हु ये'म्य् सुन्द आ'शनाव तु'बु' त'म्य्सुन्द आ'शनाव याने व्वपर छुनु' कु'हु'य—अमा ते'लि क्याज़ि असि "मे'खा'र पानस" तु' ख्वद गर्ज़ी तु' अज़र वु'न्य् नाल वो'लमुत—यूत सोरुय त्रा'विथ ति क्याज़ि असि मोह मायायि मन ग्यूरमुत—राथु'य युथ मुसीबथ वुछिथ ति क्याज़ि अ'स्य् अख अ'क्यसु'य मूलु' प्राटय करान—अख अ'क्य्सुय बेख कडान—बैयन तु' व्वपरन निशि पनु'निस दस्तारस रब लदान संसारस अन्दर पनुन यज़थ युस वुनिसताम का'यिम छु—पज़ि असि बरकरार थावुन—ये'लि सा'न्य् जानी ठीक आसि ते'ली छि अ'स्य् ति ठीक—जाती हु'द व्यकार तु'कदु'र गव सोन व्यकार तु' कदु'र—

रामजियन ये'लि रावुण तु' तसु'ज़ स्वनु' सुंज लंका, त राख्यस सीना खत्स क'र तु' व भगवान व'खत्यन हु'द मुराद तु' यछ़ पूरू'क'र—तमि पतु' आव जेशनु' मनावनु'—दीव ताहव कीर सीता राम तु ल'खिमन जियस पोशि वर्शु'न—त त'थ्य् रु'चि गरि छि अ'स्य् प्रथ व'रियि याद पावान तु' यिहय याद ताज़ु' करान ताकि अ'स्य्ति ग'छय परशूतम रामु'ज़न वेशुमार नीकियन यियि फयुर दिनु' तु' तमि निशि रु'च़ प्रे'रना लबान—श्री राम दियिन असि हरहमेशि रु'चरु'च स्वद-ब्वद तु' नीकी हुं'न्ज़ प्रवरथ—!

□ पृथ्वीनाथ कौल "सायिल"

कशमीरु' मड़ु'रु'क्य साद तु'संत

(यथ अनु'वानस तहत करु'नावव उप'स्य पनु'न्यन परनवाल्यन क़शमीरु' मंड़ु'लु'क्यन के'हंन नामवर सादन सन्तन हु'न्ज़ ज़ान, यिमव राथ द्वह दयिनाव सो'र्य् सो'र्य् हाजतमंदन हु'न्ज़ हाजथ रवा'थीक'र। तिहु'न्ज़ि ज़िंदगी हु'न्द्य कारनामु', तिहुंज़ु' करामा'च् तु' चमतकार वग़ा'रू' कथन हु'न्ज़ बाक्थ करव। तिक्याज़ि यिमु'वु'य तपु'रे'शव तु' श्वद्धव श्रोच्यव संतव रो'छ गरि गरि सोन यज़थ तु' विज़ि विज़ि द्युतुख सा'निस रु'च्रस पनुन पान रतु'छे'पि तु' बलायि। यिमु'नु'य सथज़नन हु'न्द्य् संतान छि बुन्य्क्यन फीर्य् फीर्य् वुछान आरु'हच्व च'श्मव ज़ि कांछा करिना अथु'रो'टाह युथ जन सा'न्य् पाप श्वदु'हन तु' बनिहे ये'मि छ्ुटि छ्ुटि निशि म्वकु'जार!—यिम मज़मून आसन नु' कुनि रगु' ति कुनि कु'समु'चि तरतीबि हु'न्द्य् पाबन्द। अ'स्य छि आबा'री श्रीमान शम्भू नाथ पंडिता लालड सोपूर्य सु'न्द्यायेमव असि सूत्य सम्पर्क क'रि'थ ये'मि लेखु'क्य मोलूमात फराहम क'र्य्)।

(1) सा'मी हलदर जुव प'डिता

कश्यप रे'श सु'न्दिस यथ श्रूचि़स म'रिस मंज़ आ'स्य नु' कुनि कु'समु'क्य व्यपु'चा़र द्रेंठ ग्यिवान। स्यज़रू' पज़रुक ये'रिहू ओस। छ्ल छि़दरि हुन्द न ओस नावतु' न नस। रु'च्रन ओस वाश तु' काड को'ड़मुत। सथ व्यचा़र तु' सतसंग ओस ये'ति तति शा'न्ती व्वपु'दावान—अदु' यु़वहय वख ओस सा'मी हलदर जुव पेंडितन सोपोरु' जनम ह्यो'त—प'डित खांदानुक यि क्वलु' तारुख ओस ग्वडु' प्यठय सादु' लयि सू'त्य। अ'मिस ओस अख बोय यस श्रू'दर पंडित।

कशमीरु' मंड़ु'लस छि सादु' पेंड ति क्नान तु' रे'श वा'र ति। सु रे'शुत आ'स्य्तन अदु'या सा'दिल, द्वनवय छि सानि श्वज़रु'च अलामथ। ग्र'न्ज़ र'स्य्ती साद तु' स'न्य्या'स्य्। सथमार्गी तु' सतसं'गी आ'स्य् ये'ति स्वख, शा'न्ती तु' दिलुक सीकून लबान। दयि नाव तु' हरु' नाव ओस द'छिन्य् तु' खोवु'र्य् कनन गछान।

नाव ओस। यि ओस अ'मिस कू'स बोय। यिति ओस सादु'लयि मज़ु'य। यिमन आ'स अख बे'नि हन तु' यिम द्वशवय वा'य आ'स्य अ'म्य्सु'य निश रोज़ान तु' पालनु' प्यतरु'नु'ति आयि अ'हु'न्दिसु'य गरस मंज़। सा'मी हलदर जी रूद कर्मु'' पुछि़ धर्म'चि वति हु'न्द्य वतु'प'द्य ज़ेनान। सा'मी हलदर जियस ओस वेमु'सा'ब सा'मी आफताब जी सुन्दुय ग्वरू' म्वख। ग्वरू' शब्द दिवान दिवान करि सा'मी आफताब जियन सा'मी हलदर जियस प'रीक्षायन प्यठ प'रीक्षायि। सा'मी आफताब जियन सोद पनु'निस गो'रू महाराजि सु'न्ज़ि आ'गिन्यायि किन्य् खू'रु'वारु' तहसीलि हन्दु'वारि अन्यन खू'रु'वोर अलाकु' हमलु'क्यन जंगु'लन मंज़ वाहन वर्य्यन तप अति रूद्य् तिम अ'किस ग्वफि मंज़ बहवु'नी व'र्य्यन। सा'मी हलदर जी रूद्य् अथ वक्तस दौरान पनु'निस ग्वरु' सु'न्ज़ पज़ि मनु' राथ द्वह सीवा करान। यिम आ'स्य् द्वहस अ'न्द्य् प'क्य् गामन गुठन मंज़ बे'क्शा क'रिथ दानि या तो'मुल अनान। यि ओस पानय यि दानि मुनान, छ़टान तु' तो'मुल चा़रान। तमि पतु' ओस यि रनान पाकु'वान तु' सा'मी जियस तु' सा'मी जियस निश यिनु' वाल्यन ब'क्यन ख्यावान चावान, तिहु'न्ज़ प'छ्य् पूजा करान।

यिमन बहन व'र्यन मंज़ छु सा'मी आफताब जी अ'मिस त्रे'यि लटि स्यो'दुय दज़'वु'नि दोनि अन्दर त्रावान तु' सु छु तोरु' वे'यि वारु'कारु' वापस खसान, त्रे'यमि लटि छु सु अ'मिस नंगय नारस मंज़ त्रावान तु' ज़े'वि वनान—गछ़ दज़ अ'ती। दोनि ओसुन स्यठा ज़्युन त्रोबमुत—अ'गु'न ओस चमका-चमक तेज़ान। दपान अमि वक्तु' आ'स सा'मी आफताब जियिन्य् त्रु'य (हलदर जियिन्य् बे'नि) अ'त्य्—तमि दिच़ क्रख—हय वयाह गोम दो'द—दो'द—। दपान आफताब जियन दो'पनस द'ज़िन ह'हर द'ज़िन—। केंचि़ कालु' पतु' दो'पनस नेरू नेरान कोना छुख—तु' हलदर जुव द्राव सफेद क'मीज पा'जामु' ला'गिथ ओरू' वारू' तु' कारू'। आफताब जी वो'थ पनु'नि अर्दांगिनी—वुछुसवारु' वुछुस कुनि अंगस तानस मा छुस छ़्वख लो'गमुत।

व्वन्य् आ'स्य् बाह व'री पूरु' गा'मु'त्य्। तु' यिमन ओस वापस श्रीनगर मछ़ुन। यिम आ'स्य् व'ड्य्यारु' रोज़ान। पनु'नि त्रु'यि वो'नुस माहरा मे' वयाह छु व्वन्य् करून। तोरु' वो'थुस व्वन्य् छुनु' मे' च़' सू'त्य किंही ति।—व्वन्य् च़ु'ति पानस नु' बु'ति पानस।—तमि पतु' वो'थुस सा'मी हलदर जी—गु़ल्य ज़ु' गं'डिथ—माहरा! मे' वयाह छे' आ'गिन्या—? अमि विज़ि छि आफताब जी अ'मिस वनान—ज़ि च़ु' गछ़ सा' ज़ो़लुर हन्दु'वोर ये'ति त'हन्दिस मासतु'रिस बा'यसुन्द गरु' ओस। अ'हन्दिस मासतु'रिस बा'यिस ओस नाव शंकर पं'डित। सु ति ओस श्रूच़ बटय। दे'पनस—"तिहंज़ि वारि मंज़ छे दीवी हु'न्ज़ नागु'हन तु' च़ु आ'ज़ि सिरी खसु'नय पूज़ा करान। तु' युस शब्द वो'नमुत ओसमय तमिकुय ज़फ़ करान। पूरु' च़तजिहन द्वहन क'र्य ज़ि च़ु'थि पूज़ा कुनि कु'समु' छ़्यनु' वरा'य। तु' तमि पतु' ग'छ़्य् ज़ि च़ु' व्वदु'मुल, नारु'वाब तु' तति छुय च़े' वुम्बरि बिहुन।' यि व'निथ द्राव आफताब जी सिरीनगर कुन तु' हलदर जी ज़ो़लुर हन्दु'वोर कुन।

सा'मी हलदर जी वोत ग्वरु' आ'गिन्यायि अनुसार ज़ो़लुर पनु'नि मासि हुन्द गरु'। त'मिस को'र पनु'न्य् मासतु'य् बा'य शंकर प'डितन स्यठा खा'तिरा वा'तिरा। अ'म्य् प्रुछ़ यिमन प्रुछ़यिमन यिहन्दिस वारि मंज़ु'किस नागस मुतलिक। तिम्बव होव अ'मिस यि नाग। सु वो'थ ग्वरु' सु'न्दि वनु'नु' मूजूब आदि प्रबातन तु' को'रुन श्रान द्यान तु' पूज़ा पाठ। केंचि़ कालु' पतु' ग'यि शंकर पंडि तु'न्यन गरिक्यन मुश्किल। तिम ग'यि तंग। अमा पो'ज़ शंकर पं'डितन बना'व अ'मिस अ'थ्य् वारि मंज़ु'य अ'थ्य् नागु'हनि सू'त्य् अख कमरु'हन हिश तु' ब्यूठ हलदर जी अ'थ्य मंज़पनु'न्य तपु'ह़न सादान तु' पूज़ा पाठ करान। शंकर पंडित ओस अ'मिस पा'न्य् पानु' श्रूच़ अन्न पा'नी वातु'नावान।

कुनता' जिहमि (39) द्वहय आव अ'मिस निश अख नफ़रा गुरिस प्यठ ओ'तुय। अ'मिस नफ़रस ओस नाव व्यदु'लाल। यि चा़व सा'मी हलदर जियिनि कुटियायि मंज़। प्रनामा क'रिथ बोनुन गुल्य् ज़ु' गंडिथ—"बु' माहरा छुस सा'मी आफताब जियन योर सूज़मुत। मे' छु माहरा हुकुम तो'ह्य पगाह व्वदु'मुल नारु'वाव वातु'नावु'न्य्"। सा'मी हलदर जियन कौर व्यदु'लालस जान व्वथासन। छ़्यना चना को'रुख तु' च़तु'जिहिमि द्वह' वुज़ु'नोवुन सुबहा'य तु' वो'ननसा—"व्वथ शेर गुर—। मगर गुरिस खस च़ु'य—बु' पकु' व्वखली—।" व्यदु'लाल खो'त गुरिस तु', हलदर जी छु पकान सू'त्य सू'त्य्। वति वति छु गुर खू़कान तु' पकान मगर तमु'य छुनु' कडान। यि छुनु' तरानू'य फिकिरि ज़ि सा'मी जी किथु' क'न्य् छु बराबर यिमु'नु'य सू'त्य् पकान। ज़नतु' छुयि हवु'हस या सु'हस ख'सिथ दोरान युय ज़न यि गुर खू़ख छु छ़्यवान—मगर बोज़'नु' छुनु' यिवान कें'ह ति। तु' यिथु' क'न्य् छु सा'मी जी व्वदु'मुल वातान तु' पतु' त'ती रोज़ान। व्वदु' मु़लि छें नरसिंह भगवानु' सुन्ज़ श्रावना। व्वन्य् छु सु पनु'न्य् तपु'हन सादान तु' ध्यान दारान। अ'थ्य् मंज़ छु सु म'ज़्य् म'ज़्य् बगवत् लीलायि ति वनान। ये'त्यय लेखव अ'स्य् नो'मूनु' खा'तरु' कें'ह शार :—

(1) श्री रामन स्यद क'र म्या'न्य् मनि कामन,
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु' शामन ।
नारदन ति नारायणस निश मो'गमुत,
सामु' वीद श्री कृष्णु' 'रासु'मंजु' बूज़मुत ।
प्रय ब'रनस अक्रे'यि ह्लदर रामन ॥
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु' शामन ॥ 10 ॥

(2) संसारु' सागरस सुम दिथ तर अपोर ।
गछ़ शरन सथ ग्वरन अदु' गाठ वातिबोर ॥
ज़ानु'खय सलाह, ग्वड़ु' ग'निराव श्रद्धा,
ग्वरु' वाक्यस प्यठ रोज़ ठीकिथ सदा ।
अनुग्रे'ह, अनुबवु' दारि खुलु' गछि तोर ॥
गछ़ शरन सथ ग्वरन अदु' गाठ बातिबोर ॥ 10 ॥
ह्रद्वारु' श्रान कर सां'पु'नी श्वद मन,
ब्यनु' बावस मंज़ ठीकिथ अब्यन ।
न्यर द्वन्द हुरम्वलु' हुरम्वखु' द्राव सोर ॥
गछ़ शरन सथ ग्वरन अदु' गाठ वातिबोर ॥ 9 ॥

(3) ('यि छे' अख ज़ीठ लीला यथ 58 पद छि । यि दिमोन सा'रु'य ब्रोंह्
कुन—वुन्यक्यन दिमव ग्वडु'न्युक तु' प'तिम पदु'य थोत)

☆ रिंदु' बोज़ ज़िन्दु' रोज़ हरु' चलि मरु' मरु' ।
बवु'सरु' तार दिम में गौरी शंकरू' ॥
स्यज़र गव तु' ह'ल्यस्'य स्यो'द बोज़ुन,
स्यज़र गव सिदन्तिस प्यस रोज़ुन ।
न्यरद्वन्दु' न्यर वैर न्यर अ'पीक "ह्लद'रु' ॥
बवु'सरु' तार दिम गै गौरी शंकर ॥ 10 ॥

सा'मी ह्लदर रूद्य् पन'निस गो'रू महाराजि सु'न्ज़ि आ'गिन्यायि क्रिन्य् पतु' त'ती (ब्वदु'मुलि) । व'क़ु'य आ'स्य् तूर्य् वातान । वननु' छुयिवान ज़ि सा'मी जियस बास्यव नु' व्वपदीशस लायख कु'हुं'य ति तु' तिमव ह्यो'त शा'यिरी मंज़ ग्यान छकुन । अथ वक्तस मंज़ समुख अ'मिस ब्याख अख संत यस राम जी नाव ओस । सु ति ओस स्यद प्वरूशी । सा'मी ह्लदर जियन क'र्य् अ'मिस ता'रीफ तु' वो'ननस :—

राजा जी राजा, महाराजा, राजा जी ।
राजा जी राजा, राजा राम जी ॥

यि लीला ग'यि अमि वक्तु' वड़ु' मशहूर सा'र्य्सु'य वरु'मुल्य् अलाकस मंज़ ।

आ'खरस प्यठ को'रुन यिमन ह'लिस दोद । अम्य् वो'न पनु'निस सीवक व्यदु' लालस :—बु' ह्सा'

वसु' हा सोपोर। च', गछतु' सोपोर तति छुय शाम लाल काचु‚र। तस वनतु' ड्रूगु' ह्यथ युन वर'मुल।'' व्यदु' लाल गव सोपोर शे'छ. ह्यथ। शाम लाल काचु‚र, आव ड्रूगु' ह्यथ वर'मुल। ओ'त तान्य् आयि यिम जां'पानस मंज़ अनु'नु' तु' अति प्यठु' ग'यि ड्रूगस मंज़ सोपोर। सोपोरू' रूद्य् यिम रे'शि पीर मंदरस मंज़। बोनिहनि तल को'रहक आसन। अति ओस अलीशाह अलीशाह अख मशहूर ह'कीम—सुआव अ'मिस मुलाहज़स— अति वो'न अ'म्य् सा'मी जियन अ'मिस—''ह'कीम सा'ब ! व्वन्य् बख़ु'श ज़्यम''---क्याहत म पोंसु' ट्र्क च्युतनस तु' को'रुन हकीम र्'वखसथ। पगाह सुवहन बजेयि त्रे'। व'थ्य् थो'द। ज़ल मल क'रिथ ह्यो'तुख श्रोच् वगा'रु' तु' दो'पुन सीवकन—अत्यथ दियिव लिवन फशिहन—तु' बीठ्य् अ'थ्य् प्यठ तु' छि वनान :—

''अज़रू' अमरू' शो'म्भू ।
कासतम मे' मरू' मरू' शो'म्भू ।
......हलदरू' शो'म्भू न ।
वनान वनान वे'यख त्रेश तु' को'रुख प्रानु' त्याग।
अमि वक्तु' आ'स्य् यिम पांचु‚'हा'ठु' बु'हुय् । 10 ।

(सां'मी हलदर जियिन्य अखव'ड़ लीला प'रिव तो'ह्य न'विल शुमारस मंज़)

—प्राणनाथ भट्ट

असि आमुत लोल

असि आमुत लोल, असि आमुत लोल ।
असि माजि कशीरि हुन्द आमुत लोल ।।
असि वुनि ति च्यतस सुय बोनि शुहुल,
असि अ'छनय तल सुय यारि गुहुल,
असि अ'न्दरी गोमुत जिगरस होल,
असि आमुत लोल असि आमुत लोल ।
असि माजि क'शीरि हुन्द आमुत लोल ।।

असि त्रा'त्य गछान क्वंग ज़ारन हुन्द,
क्वल' दादन वै'य सबज़ारन हुन्द.
असि याद प्यवान तिम साथ शिहिल्य,
ये'लि म्युल सपदान ओस नज़रन हुंद,
असि रा'व गरवेठ असि रोवमुत ओल,
असि आमुत लोल, असि आमुत लोल ।
असि माजि क'शीरि हुन्द आमुत लोल ।।

सुय विगिनि नचुन असुन तु' गिंदुन,
श्रवन्य श्रवन्य बोजुन आबशारन हुंद,
असि अ'छनय तल डल मानस बल,
जूनि रा'च् अन्दर स्वय न'न्य वुज़मल,
असि रा'वमु'च् मोज असि रोवमुत मोल,
असि आमुत लोल, असि आमुत लोल।
असि माजि कशीरि हुंद आमुत लोल।।

रे'शि वारि अंदर रे'शिमा'ल्य नजर,
ललवाखन हुंद टाकारू असर,
श्रुक्य नुन्दुरे'श्य सु'द्य मिलचारूक्य अज़,
हबु' खोतनि हुँदि अनहारूक्य अज़,
अ'स्य पेमु'त्य दूर असि गव यच्‌कोल,
असि आमुत लोल, असि आमुत लोल।
असि माजि क'शीरि हुंद आमुत लोल।।

ये'म्य बारु'त्य ता'निस पोछर द्युत,
असि फेरान तिथिनु'य यारन हुदँ,
असि ल'ग्य वन्य दकु' असि ल'ग्य मू'त्य दोल,
असि आमुत लोल असि अ'मुत लोल।
असि माजि कशीरि हुंद आमुत लोल।।

ते'लि बोज़ "प्राण नाथो" पु'ज़ अख शे'छ,
असि लोल यिवान दिलदारन हुँद,
असि व्रा'त्य गछ़ान व्वस्तादन हुँद,
अस्तानन हुंद, मस्तानन हुंद,
असि क्या गुदर्यव असि कोता चोल,
असि आमुत लोल, असि आमुत लोल।
असि माजि क'शीरि हुंद आमुत लोल।।

(तृतीय वर्ष एम० ए० एम०
कालेज (कैंप) जम्मू)

शे'छ ह्वद

डाक्टर रतनलाल शांत सा'बुन लेख 'ये'लि कृष्णु' बगवान क'शीरि आयि'' (कश्यप समाचार अंक 6, 7, 8) प'रिथ छु बासान ज़ि तिमव छ' कयास आरा'यी का'म हे'चमु'च तु' यकदम फा'सलु' को'रमुत ज़ि श्री कृष्ण आव यशोमती हुं'ज़ ताजपूशी करनि क'शीरि। हालांकि वार्याह कथु' छख सही (लेछमुचु') अथ मुतलक छु मे' वनुन ज़ि—

(1) गोनंद अवल ओस जरासंध सु'द बांदव। तस मदद वातनावनु' म्वखु' द्राव सु क'शीरि प्यठु' मथरायि गेराव करनि।

(2) कंस ओस जरासंध सु'द ज़ामतुर। तस आसु' जरामंधु' सु'ज़ु' ज़ु' कोरि खांदु'र्य। तसु'द वद को'र श्री कृष्ण जियन। जरासंदु'नि विदवा कोरि आसु' मा'लिस मथ'रायि प्यठ हमलु' करनस वुतुश दिवान।

(3) हरवंश पुरानु' मुताबिक कश्मीर-अ दिपती गोनंदन को'र मथरायि पश्चिम्य् किन्य् हमलु। जरासंध ओस मथरायि महाविशाल सेना हयथ च्वपा'र्य गेरस मंज़ अ'निथ तबाह करुन यछान। अथ हमलस मंज़ आ'स्य् जरासंदनि तरफु' करीबन 30 राजु' सीना हयथ मदतस आमु'त्य्। मगर श्री कृष्णु नि तरफु यिम राजु' आ'स्य तिहुंद नाव छुनु' दिथ। अमापो'ज़ महाभारत किस 'सभा पर्वस' (14 : 35) मंज़ छु कीवल यूतुय लीखिथ ज़ि 18 हव क्वलव को'र मीलिथ जरासंधु सु'द मुकाबलु'।

(4) अथ य्वदस मंज़ गव राजु' गोनंद बलरामनि द'स्य मारु'।

(5) राजु गोनंद सु'ज़ राज़दा'नी कति आ'स अम्युक छुनु' कुनि ज़िकिर।

(6) गोनंद सु'द ने'चुव दामोदर ओस अमि लडायि विज़ि क'शीरी। तस रूद मा'ल्य सुं'दि मरनुक खारु'। सु वन्यव क'शीरि हुंद राजु। सु ओस आत्मसम्मा'नी। तस रूज़ पितृ-वधुक' बदलु' ह्यनु'च फिकिर। तस रोव करार। आ'खु'र क'रु'न अख ब'ड सेना तयार। अथ आसन ज़रूर कें'ह वरी ल'ग्यमु'त्य्। त'म्य ये'लिबूज़ ज़ि सिंधु-ब'ठिस प्यठ गांधारस मंज़ छि यादव अ'किस स्वयमवरस मंज़ बुलावनु' आमु'त्य त'म्य ज़ोन मोकु' गनीमथ तु' को'रुन हमलु' राजतरंगिनी, तरंग। श्लोक 66)

(7) अथ य्वदस मंज़ गयि चक्रदर श्री कृष्णु'नि द'स्य वार्याह य्वदु'वीर मारु' यथ मंज़ पानु' दोमूदर ति ओस।

(8) दामोदर ओस शुर्य ज़ेहन। मगर त'म्य सु'ज़ रा'नी यशोमती आ'स गर्बवती। ल्यहाज़ा क'र श्री कृष्णन तसु''ज़ ताजपूशी। श्री कृष्णन ओस दिव्य द्रे'श्टी किन्य ज़ोनमुत ज़ि तस छु गर्बस मंज़ ने'चुव, ल्यहाज़ा क'र त'म्य कुमारसु'य वर्गु'' पा'ठय् ताजपूशी।

(9) राजु' गोनंद, दामोदर तु' गोनंद दो'यिम सु'ज़ कथ छे' कल्हणन नीलमत प्वरानु मेजु अ'न्य्मु'च्। यि प्वरान छुनु' कुनि जायि यशोमती हुंद नाव हयवान। कल्हणन छु यि नाव खबर कमि ग्रंथु' मंजु' छां'डिथ ओ'नमुत।

(10) ये'लि श्री कृष्णन यशोमतियि ताजपूशी क'र, तसुंद्य मंत्री ''द्विज'' आ'स्य् नु' प्रसन। अवय छु कल्हण पंडितन श्री कृष्णु' सु''ज़ि जे'वि नीलमत प्वरानुक श्लूक नंबर 246 पननि ज़बा'न्य् मंज़ श्म' यिरा'विथ ल्यूखमुत। द्वशबु'न्य् श्लूकन मंज़ छे' क'शीरि मंज़ अज़मथ तु' बजर। क'शीर पारवती तु' राजु' हर सु'द अंश मा'निथ वखनय क'रमु'च्।

(11) ये'लि क'शीरि वा'तिथ यशोमतियि पो'तुर ज़ाव, तस आयि ज़ातु'कर्मस सूत्य ताजपूशी ति करनु'। तखु'त तु' बुड्यबव सु'द नाव प्रोव त'म्य अकी सातु'। (राज० त० श्लूक 75) चूं'कि सु ओस बालु' राजु' ल्यहाज़ा हयो'क नु' महाभारत किस प्वदस मेज़ का'शिर्य राजन हिसु' निथ।

(12) ये'लि पथ कालस मंज़ खे'त्रिय राजु' प्वद करान आ'स्य् तिम आ'स्य् पनु'नि

रा'निथि तु' ह्र्मखानु' ति सूत्य निवान। ल्यह्राज़ा ये'लि गोनंद अवल तु' दामोदरन यादवन सू'त्य य्वद को'र तिमन आसु' पतु'नि रानि सूत्यो। तिमु' आसु' य्वदबूमी दूर कंपस मेज़ आसान। अवय आसि श्री कृष्णन स्यंदु' ठा'ठिस प्यट गांधार देशस मंज़ यशोमतिश्रि ताजपूशी क'रमु'च् न कि तस सू'त्य क'शीरि यिथ।

(13) दोमूदर बुडरि ग्वडु' सो'थ बनावन बोल राजु' ओस न थि दामोदर बल्कि दामोदर दामोदर दो'युम युस राजु' जलोकस पतु' हुकुमरान बनान छु। (राज० श्लूक 153)

(14) नीलमत पुराण छु बिरोदाबासव सू'त्य ब'रिथ। अथ प्वरानस मंज़ छु क'शीरि हुंदि नावुक ज़िकिर करान यि वननु' आमुत ज़ि स'ती देशुक जल आब बलरामनि ह्लु' सूत्य कडनु'। जलस छि बनान 'क' तु' सु को'ड बलरामन तु' अवय प्यव दीशस 'कश्मीर' नाव। (श्लूक 227)

(1) जलोद्भव तु' केशब सुंद य्वद बुछिनि छि सा'री दीवी दिबताह पवित्र द'रियाव 'नौका बंधन' बातान। श्लूक न० 174-180 तस मंज़ छि बनान ज़ि अनंतन फुटरोब परबथ हलु' सूत्य् तु' जल द्राव न्यबर। हरिहरन चो'ट च'कर' सू'त्य् जलोद्भवस कलु' तु' मोरुन। केशवसछु जनार्दन, मधुसूदन विष्णु तु' हरिहर वननु' आमुत। ये'लि बलरामन बाल च'टिथ सती दीशुक जल न्यबर को'ड, श्री कृष्ण आसिहे ज़रूर क'शीरि आमुत तस सूत्य। तिमन द्वन ओस सिरिफ त्रे'र्यथ ज़िठु' कान्'सर। यो'दवय नीलमत पुराणु'च यि दलील सही मानव, तेलि छु सती सरुक ज़ल महाभारत य्वदु' ब्रोंह पहन द्रामुत। यि छुना विरोदाबास? महाभारतस मेज़ आसिहे यि दलील ज़रूर दिथ। ते'लि छा सती सरुक ज़ल सिरिफ 5000 बरी ब्रोंठ कडनु' आमुत?

(16) गोनंद अवल तु' यादवन हुंदि य्वदु' आसि कम अज़ कम 20 वरी पतु' महाभारत य्वद सपुदमुत। अयि ब्रोंठ आ'ठ द'ह वरी आसि दामोदर तु' श्री कृष्णु' सुंद य्वद सपुदयुत।

(17) 'कथासरित सागरस' मंज छु अ'किस कथि मंज क'शीरि हुंदि 'प्रद्युम्न पीठ' आसनुक ज़िकिर। तमि मुता'त्रिक आसि श्रीकृष्ण तमि विज़ि क'शीरि आमुत ति क्याज़ि शारिका प्रदेशस छि प्रद्युम्न पीठ ति बनान। (मे' छनु' कथ याद न छिम नोट मूजूद। सोरुय रूद क'शीरि। ज़ानि दय तति क्याह् आस्यख थोवमुत। सो'त्य रोव)।

दर असल छु सान्य देवमाला'यी कथन प्वरानन हुंज़न कथन तु' तवा'रीखस बार्याह् रल गोमुत। तवा'रीख बदि कडुन छि वार्याह् मुश्किल का'म बने मु'च्। कयास आरा'यी छनु' नाकारु' कथ मगर वाकात शहादत तु' सबूत गछ़न।

आसु'न्य। द्रे'श्टांतव सू'त्य यियि तवा'रीख बदि कडनु'।

—मोतीलाल क्यमू
अपना बिहार, कुंजवानी, जम्मू।

क्यमू सा'बन छि न म्या'न्य अका'य कथ मा'न्यमु'च् ज़ि श्रीकृष्ण क्याह् आसु'हन रानी यशोमतियि ताजपूशी करनु' बापथ क'शीरि आमुत्। गो कि राजतरंगिनी महाभारत या नीलमतप्वरान ह्रुनि मेज़ ति छुनु' क'शीरि अंदरु'य यि रसु'म करनुक ज़िकिर, मगर ये'मि कथि हुंद ज़िकिर ति छुनु' ज़ि गांधारस मेज़ु'य क्याह् सपुद यि अंजाम। अत्यनु'य छु इतिहास किस ता'लिबि अ'लिमस कयास करुन। अमा स्यंद द'रियाबु' किस ब'ठिस त्यठ किथु' क'न्य सपदिहे ताजपूशी यस रानि यशोमतियि रून मोरुन तु' कंपन मेज़ बुलु'बाख व'छमुच् आसिहे, त'स्य यीहे दुश्मन तु' ताज लागिहेस शेरि? ताज़ु' ज़ख्मन छु अंग यिनु' खा'तरु वख लगान। बे'यि ओंस नां कृष्ण ज़िपस क'शीरि हुं'द्यन बाकय ता'रिफदरन, दरबार्यन, व्यदवानन, आम लुकन तु' खास कर ब्रह्मनन समजावुत, तिम पानस कुन करु'न्य्? अदु' हे'किहे तिहुंद यनुन, सु कोनु' आसिहे क'शीरि हुं'दि जान्यरु'/खा'तरय, माननु' यिथ। अथ आसि कख लो'गमुत तु'यि है'किहे सिरिफ क'शीरि मंज़ु'य मुमकिन सपदिथ।

—र० ल० श०

KASHYAP SAMACHAR

Official Organ of Kashmiri Pandit Sabha,
AMPHALLA, JAMMU TAWI, J. & K., (India) Phone : 47570

FEBRUARY 1995
Vol : VI No 2

CONTENTS

Printed at : ROHINI PRINTERS, Kot Kishan Chand, Jalandhar City.

EDITORIAL

TOWARDS SELF-EXPRESSION

The Kashmiri Pandit community is passing through a period of renaissance. Most people may not perceive it, nor are they able to appreciate its significance. In fact there are a large number of people who are pessimistic about the future survival of the community and, therefore, want to preserve some of the cultural traits, without realising that even this apparent insecurity is a contributory factor as well as a symptom of this renaissance.

An analysis of the great Renaissance in Europe and other renaissance movements in different parts of the globe reveal a pattern. There is always a prolonged period of suppression of the freedom of thought and a simmering discontent, also sometimes compounded by a tyrannical or insensitive administrative regime. Then follows a catastrophe which triggers the renaissance movement. This is exactly what happened to the Kashmiri Pandits and is the predisposing requirement of a movement.

One of the essential traits of renaissance is a rapid expansion in knowledge and consciousness The great European Renaissance resulted in expansion in literature, culture, science, art and philosophy. Not that there was no resistance or reaction. But the reaction was swept aside by a torrent and flood of mass consciousness and awakening which opened up a whole society to a new resurrection and a culture of adventure, invention and research.

The Kashmiri Pandit community is at the threshold of such a movement. For the first time after several centuries this community has become conscious of itself and its intellectual and philosophical potential. One of the fallouts of this consciousness is the sprouting of a large number of literary, cultural and social organisations, groups, societies and trusts. It is also reflected in the outpouring of an enormous volume of literature, poetry, political and social commentaries etc. A number of magazines, journals, periodicals, newsletters, souvenir volumes have appeared from various places throughout the country and from abroad, wherever Kashmiri Pandits live. A culture of self expression is gradually taking over.

It is true that most of these publications are not upto the standard of modern journalism, or may not have a substantial readership. But the very fact that they are coming out and are trying to capture a target audience and readership is indicative of the effervescence within the community and an enormous upsurge in self-expression. Eventually many of them may not survive but those that do will positively contribute towards literary and cultural emancipation of the community.

In this background, the reaction among some of us that the proliferation of these publications needs be discouraged, is ill placed. There are even some who naively suggest that the Kashmiri Pandits should concentrate only on one publication issued from New Delhi, and make this journal alone a vehicle of expression They do not seem to understand that the community is opening up as never before, and the bubbling talent is so enormous that what to speak of one, not even a score of journals is enough to allow expression to it. Even if we want to, we cannot and we should not try to stop this tide of self expression. Let fountains play from every side, let lamps be lit wherever you can, for all shall irrigate the soil and all can only shed more light.

Dasavataram, The Story of Human Evolution—1

—S. K. SHAH

[The Puranas narrate oft repeated stories about the ten incarnations of Lord Vishnu, the protecter diety of the Trinity, who had to manifest Himself in various forms, for the physical, mental and moral emancipation of humanity. Interesting though these stories are, within the framework of mythological rigmarole it is difficult to analyse their figurative aspects. Can we relate the symbolism depicted in them to the events in earth and human history as revealed by scientific studies ? Perhaps not in all cases. But in some the symbolism is glaringly suggestive of the actual events which cannot be explained away as a mere conincidence. This article is the first of the series giving a scientific appraisal of some of these events. Where these stories a result of a spiritual insight into very remote and distant past ? The reader can draw his own conclusions.]

MATSYA, THF FISH RULES THE ROOST

In the deluge Lord manifested Himself in the form of a fish and created the Maya comprising the organic world. He arose after a major holocaust **(Pralaya)** which had destroyed all that existed before. The living beings were guided and protected by the **Matsya Avatara**, and He spread the seed of life far and wide throughout the seven seas and beyond. He destroyed all detractors and allowed the globe to proliferate in peace and harmony. So goes the story of the first **avatar** of Lord Vishnu.

The origin of life on earth is a unique phenomenon and is a result of one chance in a trillion. That is why life does not exist on any other planet of the solar system and possibly not on any other solar system of the universe. It was made possible by the natural synthesis of the first molecule of deoxyribo nucleic acid (DNA). DNA is the life force which can multiply, replicate itself and diversify in different directions producing a variety of life forms. For its synthesis, apart from the right composition of the medium, an enormous amount of energy input in a single pulse is necessary, which is not normally forthcoming in the universe. In the laboratory so far the scientists have not been able to simulate such an energy input and, therefore, synthesis of DNA in the laboratorv is still a distant dream. But through some catastrophic action, probably by the hit of an extra terrestrial body like an asteroid or a comet, more than three billion years ago DNA was generated and thus the first life originated on this planet. Initially the living beings had a very simple organization and it took them over two and a half billion years to acquire what zoologists call a centralized nervous system or what a layman would call a brain. The group of organisms which were first to acquire a reasonably centralized nervous system, mainly located in a well formed head, and

a powerful sensory perception, represented by eyes etc., were the fishes. They emerged sometime around 500 million (50 crore) years ago following a mountain building event of catastrophic proportions, which destroyed many life forms which existed before. Immediately after appearance, the fishes dominated the oceans of the world. All living beings till then were restricted to ocean alone. The fishes were better organized, aggressive, agile and resourceful than the contemporary organisms. They soon acquired a swimming mechanism based on buoyancy principle which made them the most powerful predators of the oceans. Soon they learnt to live in fresh water as well and invaded on-shore rivers and lakes. Thus was ushered in an age of fishes, represented by a time span of over 30 million (3 crore) years, when fishes were the ruling organisms of the globe, They were at the apex of the food chain that existed at that time.

Human evolution, as distinct from evolution of other organisms, involves a very rapid, almost explosive, mental evolution and expansion of brain. But the earliest manifestation of this evolutionary trendline is in the origin of fishes, which could be classed as the first landmark in this direction. The culmination of this trendline was in the evolution of the modern man.

When Patanjali talks of three fold emancipation through Yoga viz. the physical, mental and spiritual, which could be simultaneous in an ideal situation, but could be attained in a sequence, he is only referring to what has been the natural process of human evolution through ages. If **Mastya avatar** spread the seed of life far and wide He was taking the first step into a world of mental domain along with the physical ascendance. This was a step into the realm of consciousness towards the personification of the man as the **Param Braham.**

●

Shri Ramakrishna : A Few Reflections-I

—*DR. K. B. RAZDAN*

Great people, humans who immortalize themselves are born rarely in this world. The great bard, William Shakespeare once remarked : "What a piece of work is man" ! God made man after his own image, so goes the scriptural symbol and yet it is man, now the denizen of a demonic human world, who with callous and deliberate impunity insults and desecrates not only his God, but his soul and conscience as well. In such a world of the nightmare and the scapegoat, saints and apsotles like Shri Ramakrishna become the embodiments of peac , love, piety and truth. Shri Ramakrishna, according to his biographers was born on 20th of February, 1833, and surrendered his mortal frame to the Supreme Father on the 16th of August, 1886, at one o'clock in the night. The village in which this great son of India was born was mainly inhabited by people of lower castes, mostly blacksmiths, Karmakars, with a sprinkling of carpenters, cowherds and oilmen (Telis). The father was the head of the only Brahmanic family settled in the village. a strictly austere man wedded to honesty and simplicity. To his son, he gave the name Gadadhara, another name for Lord Vishnu, implying a person who wields the mighty club. Shri Ramakrishna actually got a club as a gift from his father, and as the legend goes, the latter had a prophetic dream while going on a pilgrimage. In this dream, Lord Vishnu appeared and told the father that he, the deity would be born as his son. It was only later in his life, that this great man came to be called as Shri Ramakrisha. Khudiram Chattopadhyaya the father, was a great lover of God, an epitome of straight-forwardness independence, self-reliance, and above all handsome in mind and figure. According to reliable sources, Shri Ramakrishna's father possessed supernatural powe.s, what is called as Vak-Siddhi, power of clairvoyance, wh:ch means that whatever he uttered, good or bad, of anybody or about anything, would always come to pass. Ostensibly, the poeple of his village held him in high esteem and almost eulogized him in every conceivable manner. Shri Ramakrishna's mother, Chandramani Devi, was a living personification of kindness, emancipation and simplicity. Once it so happened that a very rich disciple of her son came to her once and pressed her to accept a gift of a few thousand rupees, but to his amazement the pious lady declined the offer.

Shri Ramakrishna himself never touched money, throughout his earthly existence. His most fervent and ardent disciple Swami Vivekananda, one day secretly kept some coins hidden under Shri Ramakrishna's pillow. The pious man could not get any sleep throughout the night and on knowing about the cause of his discomfort, he told his disciple "Narendara, you should not have done this." The influence of his religious-minded parents shaped the mind and the psyche of the young Shri Ramakrishna to a great extent. As a young boy, he used to memorize and repeat verbatim many religious dramas, operas and poems, even the acting, music and everything else. Blessed with a musical voice, the young Ramakrishna would simply enthrall the listeners who would listen with

rapt attention and get simply transfixed with the magnetic charm of the singer's rendering. He could easily draw and make images of gods and goddesses, and at the tender age of six displayed an infallible expertise in the interpretation of the Puranas, the Ramayana, the Mahabharata, and the Srimad Bhagvata. Of course the knowledge about all these great ancient classics and epics, was in Bengali, as Shri Ramakrishna, according to one of his close friends, Mozoomdar, never knew a word of Sanskrit. Interestingly enough, in his later days, Shri Ramakrishna would constantly think about practising the tenets of Christianity. He had seen Jesus in a vision, and for three days he could think of nothing and speak of nothing but Christ and His love and His supreme sacrifice. A peculiarity marked all the visions of Shri Ramakrishna : he always beheld them outside himself, but when they vanished in his visions, they seemed to have entered into him. This became true of Lord Rama, of Shiva, of Kali, of Krishna and even of Jesus, in fact of every other god or goddess or prophet.

After all the visions and individual realisations of diverse faiths and religions, Shri Ramakrishna came to the conclusion that all religions are true and cater to the same ultimate goal : the realization of the Atman, the Infinite and the Omnipotent one. At the same time, Shri Ramakrishna became conscious of the fact that most of the religions took into account only one aspect of the Akhanda Sakkhidananda : the undivided and eternal existence, knowledge and bliss. Yet, as already pointed out, each of these different religions seemed to him to focus upon the ONE and the only ONE.

Shri Ramakrishna also attained tremendous powers in the realm of Yoga, but never displayed these to impress people or advertise himself as a super-human being. Power of working miracles could never be gloated over, as the same could prove an obstacle in the path of attaining perfection. All the same, people or persons who went to see Shri Ramakrishna with a pure and contrite heart found ample proofs of his possessing such powers as thought-reading, predicting future events, seeing things at a distance (Divaya Dhrishti), and curing a disease by simply willing. A mere touch from Shri Ramakrishna would put persons into immediate Samadhi, in which they saw visions of gods and goddesses and lost for hours all feeling or sensation of the external world. People blessed with such touches, may not have changed outwardly, but inwardly they would experience a total transformation of their thoughts, a purgation of their minds and souls.

(To be continued)

Mind and Disease

❑ Ashok Braroo

Last month while conversing with my office colleagues on situation in Kashmir someone remarked that most of the Kashmiri Pandits living in Jammu fall prey to disease too frequently. The presence of large number of Kashmiri community in the hospitals, nursing homes, clinics of Jammu far in excess to their population in comparison to the local populace was cited by him in support of his argument. My hyperego immediately retorted & I told him that dislocation was the chief reason for high incidence of disease among Kashmiri displaced people. I quoted several papers in support of my argument wherein researchers are of the view that the incidence of carcinogenic diseases is higher amongst migrated population across the globe. Honestly I admit that I was never convinced of placing displacement in relation with disease. Also I told him that our community is highly educated and naturally more health conscious My colleague had no other way except to give in. However, my own mind was not convinced.

Thereafter I visited the house of my relative in Trikuta Nagar, Jammu to inquire about the health of an elderly person. During the conversation with the host someone remarked that migration has brought disease as a dowry for Kashmiri Pandit Community. Another elderly person in the room said that Kashmiris consume mal-nutritious diet and try to save for future needs and ruin their present by way of disease. He cited the example of his Sikh landlord also a displaced person from Kashmir. As per him the family enjoys a robust health because of healthy food habits in comparison to the family of same economic and social strength from our community. I being from the field of nutrition could not be convinced by this argument as Kashmiris consume a good combination of milk, flesh, fish, cereals and greens which is enough to meet their approximate requirement on an average.

On return I gave more thought over the issue. More than seven blood relations of mine died since May 1990 of cancer. Three are awaiting their death. More than 20% of my relations and friends including my young sister is suffering from heart ailment. If statistical data are collected, I feel we may get a much worse picture. Every family is in distress due to disease. I pondered over this problem more and infact read several books on this subject. The answer in most of them lies in our mind.

The greatest tragedy which has be fallen our community has been wrought by Theofasciat Islamic crusaders in Kashmir in the shape of mental agony for all displaced people in addition to physical annhilation of our kith and kin. Although it is said in Geeta that soul neither dies nor burns yet our souls have been wounded beyond redemption. No agency in world including our own intellengentia has done much research work in this direction. We have lost material and I know we will rebild it but what about our health. Health lost is lost for ever. Medical men can at the most provide us crutches.

Every action has equal and opposite reaction as per the laws of motion. The

miseries perpetuated on us by the inhuman Islamic fundamentalists, J & K State Govt. and even the apathetic attitude of Indian Govt. had to be reacted to release our body of tension. The reaction should have been in the violent way or non violent way. Violent methods are abhored by our community to this extent that most of our organisations put all vengeance of pen on paper to calm the fire sparked by valiant martyr Sunil Koul. May God bring peace to this illustrious son of the community. Non violent method does not suit us as we cannot accept a leader and be honest follower. Scriptures say that it is a sin to bear injustice. We committed that sin. We did not react. We wanted others to cry for us. The sheer will power of 12 lakh Muslims of Chechniya against the might of Russia is a recent event. So the resultant emotional stress has been transmuted to our physical body from mind.

Medical experts themselves do most positively and implicitly admit that action in the body must meet with reaction. The body must have a reaction of emotion in question equal and opposite. Dr. Karl Henninger claims that laws of motion particularly the third law of motion is definitely applicable to emotion, displeasure and disease. Delving down to the roots of human action no action can ever take place unless the assumption of the existence of inherent sensation and emotion in the living body is postulated. When a given emotion acts, it acts on nothing but the body of the concerned human being. When an emotion puts the body into action, pushes the body, without exc ption in its turn, the body must push back the emotion with an equal and opposite force.

However, we remained passive in our reaction. The community which lost more than 1000 men, women and children at the hands of barbaric people bore the brunt with sobs. So the reaction has been taken by our body in the form of stress resulting in disease for most of us. "Every disturbing, depressing thought that enters the brain has a depressing effect on every cell of the body and tends to produce disease. Fear, anger, jealousy, hatred are all of the forerunners of disease and the messengers of d ath", says Dr. Davis (*Philosophy of life*). I am reminded of one of our own brilliant physician in Jammu abcut whom several people complained during 1990-1992 that he has lost touch in his profession since migration from Kashmir. The reason given was that after coughing in Rs. 30 or 40 as consultation fees, he would suggest no medicine except a few tablets of vitamins etc. They never understood their state of mind while the wise doctor understood it better. Dr. Trine says "we are rapidly finding today and we shall even more and more as time passes that practically all diseases with its consequent suffering has origin in mental and emotional states and condition." (*in tune with infinite*)

The restoration of our mental peace is the prime need for rejuvenating our mental and physical state of health. The circumstances and environment will change only to the extent we change it. However, we only torture our mind by remaining inert to given situations and give vent to our anger in private discussions. This is like fighting battle of life on a chess board. We have inflated our ego with respect to our brothers which hampers our collective approach to problems. When a heap of unsolved problems torment our mind and we feel that this problem cannot be overcome on our own then the resultant frustration will bring physical disaster in the form of disease. The mind perceives an object in that very form in which it imagines it to be. Larson says, "That the mind exercises great power on the body, that every mental state is a

cause, producing its corresponding effect upon the moral, the mental and the physical conditions of the individual and that every thought is a force that can change, transform or at least modify almost anything in the human systems—these are the facts that are no longer disputed". (*How to stay well*—C.D. Larson).

Keeping in view our innate nature and present difficuties the best way to bring physical and mental harmony in our body is by straining our mind to a lesser extent Some of the mental agony can be lessened by prayers and Yoga. When we cannot find a solution for any problem nor can expect help from a friend or a relative then the prob'em should be left to God without remorse. One thing we should never forget that the mental stress can bring permanent disability to our body which in turn will increase the problem. We should encourage 'SAMOHIK' Community prayers to restore mental health and try to get rid of stress conditions. Daily Japa before going to bed will also work as a coolant.

GUILTY CONSCIENCE OR POLITICAL GIMMICKRY ?

"*What shall I do to my conscience* ?"

"*Go and hang it on the nearest tree.*"

But the conscience was so lean and emaciated that it would not fit the noose and fell down every time they tried to hang it. So they decided to bury it alive. In any case it was more dead than alive. However, they wanted it to remain undisturbed and, therefore, chose Purkhoo Camp as its final resting place. The epitaph reads, "The Prime Minister of 9 0 million people donates Rupees 575 thousand for this bus for boys and the adults have not been forgotten either and they get Rupees 25 thousand for the community service to pray for the peace of the deceased conscience."

—SOMU

Kashmir From Past to Present—III

—Compiled by : C. L. DURANI

In the earlier portions of Kalhana's narrative (Rajatarangini) as comprised in the first three books as well as in the major portion of book IV, there is no chronological data mentioned. From the concluding part of the fourth book and other remaining four books, the dates of accession of the individual rulers and of other events of political or economical importance for the country (Kashmir) are indicated by the quotation of the exact years of the Laukika era, coupled in most cases with equally precise statements of the month and day. The Laukika or Saptaresi era, as it is also often designated is still in current use among the Brahman population not only in Kashmir but also of the hill territories such as Chamba, Kangra, Mandi etc. Prof. Buhler was the first to prove from the extant tradition of Kashmir Brahmans and other evidence that the commencement of the Laukika era is placed on Caitra Sudi I of Samvat (Kaliyuga) 25 (expired) or the year 3076—75 B.C. Professor G. Buhler from the Bombay Education Department during the summer of 1875, visited Kashmir in search of Sanskrit manuscripts and it is at this time he made, many brilliant researches. Since his discovery, correct accounts of the Laukika reckoning are to be found in all hand books of Indian chronology. Laukika years are counted at present in Kashmir from the first day of the bright half of the Luni-Solar month Caitra. The current year 1994-95 according to Christain era corresponds to the Laukika year (Saptarsi) 5070.

The first book of Kalhana's Rajatarangini starts from king Gonanda I (accession assumed Kali Samvat 653 corresponding to Laukika Samvat 628) and his three successors. Gonanda I, the powerful ruler of Kashmir, being called upon for help by his relative Jarasandha, King of Magadha, besieged Krishna (Lord Krishna), the divine hero of the epics, in his town of Mathura. After a prolonged contest the Kashmir king was slain by Krishna's brother Balabhadra. Damodara I son of Gonanda I succeeded as the king who was also killed by Krishna as the former attacked the latter to avenge his father's death. The disc-wielding God Krishna had Yosovati, the King's pregnant widow, installed on the throne. This unusual procedure Krishna is made to explain by a reference to the spiritual importance of the Kashmir land as an in-carnation of Parvati, In due time the queen bore a son who was crowned as king of Kashmir and known as Gonanda II.

Kalhana has mentioned that he is indebted to Nilamatapurana as he has written the account of first four Kings from Gonanda I to Gonanda II from this book. After Gonanda II, Kalhana places thirty five kings as lost whose names and deeds have perished through the destruction of the records. The other kings who have been mentioned by Kalhana in his first book after the gap of thirty five lost kings are as, Lava, Kusa, Khagendra, Surendra, Godhara, Suvarna, Janaka, Sacinara, Ashoka, Jalauka Damodara II, (Huska, Juska, Kaniska), Abhimanyu I. The period of reigns for these kings of Kashmir as mentioned in the first book is estimated as 1266 years (Laukika S. 628—1894).

In the last issue on this topic it was said that Buddhism was brought to Kashmir in reign of Ashoka (274 BC to 232 BE) and how two sects of it namely Hinayana, and Mahayana came into existence in the due course of time. After the death of Ashoka, Kashmir appears to have regained her independence. He was succeeded by Jalauka whom Kalhana states to be the son of Ashoka. But in Indian history there is no mention of a son of Ashoka by that name therefore Jalauka was probably a native king of the valley. During the reign of Jalauka, Buddhism suffered a reverse in the beginning but later on he was converted to the new faith. Jalauka patronised learning and established constitutional government on firm foundations by introducing a council of ministers and created eighteen departments of state to administer the country in an organised manner.

Jalauka is the hero of many traditions recorded by Kalhana. Once, runs the legend, the king heard of the sanctity of the Sodara spring (Naran Nag) from the Nandipurana and thence-forth used to woship at that spring. He wished that it might be near the shrine of Jyeshtrarudra which he was building at Srinagar. Being engrossed with some work he forgot one day his daily observance and could not take his bath from the Naran Nag spring. But to his great surprise he found a spring breaking forth in the waterless spot at Srinagar which was alike to Sodara in colour, taste etc. He offered to the Jyeshtrarudra temple one hundred ladies of his seraglio who used to dance daily before the idol. His wife Isha-nadevi built temples on the approaches to the Valley. The king together with his queen retired after a reign of 60 years to Siramochana, and there passed away.

Damodara who is perhaps a descendant of Ashoka or belonged to some other family succeeded to the throne. He was a supporter of Saivism. A legend, is narrated by Kalhana, about this king. It is said that one day he was going to the river Jhelum to have his bath after a shraddha ceremony when some Brahmans asked him for food before taking his bath. The king replied, "I cannot feed you before bathing. Go away (sarpata) sharp". Thereupon the Brahmans cursed him. "May you be transformed into serpent (sarpa)." Damodara was dismayed and begged their mercy. The curse could not be taken back but it was made conditional by the Brahmans and they said to him, "But when you will hear the whole Ramayana recited in a single day the effect of our curse will cease." Damodara became a snake and it is believed that even to the present day he is roaming in that form amidst the dark solitudes of the plateau. Damodar Uder is now the site of the Srinagar air field. Satras-teng a waste spot high up on the Karewa is named as the site of Damodara's palace and a spring at the adjoining hamlet of Lalgam as the place where the king performed his ablutions.

●

Republic Day Blasts Expose Government's Hollowness

☐ **Avtar Bhat**

The series of blasts during the Republic day function in Maulana Azad Memorial Stadium, Jammu which claimed 8 lives and injured over 50 has once again belied the claims of both Central and State governments that militancy is on the wane in J&K.

The blasts which were preceded by recovery of some explosive devices on the Jammu-Pathankot Railway Track have indicated that Pakistan's Inter Service Inteligence (ISI) is much active in Jammu, to spread a communal tension in this peaceful region, where people have shown lot of maturity and tolerance despite being provoked by militants at a number of times. Jammu has seen a lot of violence and bloodshed due to Pak sponsored militancy in Punjab and Kashmir for over last 10 years. The brutal killers have not spared the innocent school children from making targets.

Right from the bomb blasts two years back in two passenger buses near Vijaypur and Digiana, hundreds of innocent lives have been lost in the militant's attacks and to the utmost surprise of the common man, government has miserably failed to contain such type of incidents in this city where, unlike Kashmir, militants have few harbourers and sympathisers.

The Republic Day blasts which were aimed at eliminating top brass of state administration, including Governor Gen. K.V. Krishna Rao exposed the state administration to its hollowness and impotency which despite prior information from RAW and IB failed to take adequate security measures during the Republic Day function. Much to the chagr in of common man is coincidence of blast timing with Governor's reported words that back of militancy has been broken in the state when, the first blast ripped the stadium. Thank God that Mr. Rao and some other dignitaries were saved, though nation paid a heavy price by losing eight precious lives. But at the same time ISI and its agents have succeeded in indicating that they have gained long roots in the state administration and are out to breach the peace in the city of temples.

Mr. Rao after taking the reigns of state administration has been repeatedly talking of initiating a political process in the Valley, a prelude to holding of elections in the state. At many occasions the Governor also appealed to the state politicians, who are presently in oblivion, to make the contacts with masses in the Valley. In this regard Gen. Rao also promised to provide the full security to such politicians who will come forward for such purpose. Though some

politicians tried to follow his directions in previous months, they had to beat a hasty retreat after the attacks on political leaders and workers increased again.

It is an admitted fact that common people in the Valley are fedup with 5 year old militancy but this can never be taken a signal for initiating of political process, as a large number of militants still exist in the Valley who with the support of ISI are out to throtle any such move of government. The state government has already taken some wrong steps after giving control of security to local police at some vital places, despite having reports that it has wide links with some militant outfits, as reportedly a large number of J & K Police personnel deserted their companies to join the militancy in previous years.

To the much discomfiture of Jammuites has been the appointment of two Deputy Commissioners during last year in Jammu and Udhampur districts despite the people's protests and agitation. The outright rejection of these demands by state government has also resulted into the present state of affairs in Jammu.

Though the Republic Day blasts has shaken the nation as a whole, it has also unmasked the conspirators and foreign agents working in the garb of state administrators, and if government still fails to bring them to book there is every apprehension that Jammu too may go Kashmir way.

PRAYER TO VEDIC GODS

Renderings from the Veda-mantras

by—**Jankinath Kaul "Kamal"**

INDRA

O Sublime **Indra** of the Vedas !
With Thy great brilliance—
Thy heroic power,
Display Thy great valour—
Thy brilliant discretion.
Sharpen my mental power
As if it were a blade of iron ;
Make me shine bright
Like fire produced by friction.
Thy form, visible everywhere,
Is Thy creation—the MAYA,
That moves in many forms.
Give me brilliant ability
To fathom Thy depth—
That is unfathomable bliss.

BRIHaSPATI

O Thou **Brahaspati** !
Born of **rita**, the blissful restraint,
Give us that wonderful treasure
By which the good man excels
In brilliance and inner power,
That shines among the people
And is radiant with energy
Of wisdom and faith.

AGNI

Thou art **Agni**
The bestower of intellectual brilliance
Whatever deficiency there is,
Make that up, by Thy grace.

MITRA & VARUNA

O Mitra ! O Varuna !
Help us to great wealth
Both of the earth and heaven.
May we be happy
Through the grace of heaven and earth.
May we live free—unhindered.
Give us bliss
That spreads to the whole life.
May we have mental knowledge
That produces unity.
May there be establishment of harmony
Among men—young and old.
May we be of one heart
Free from hate and ill-will.
May we love each other
As the mother-cow loves her calf.
Let the son be loyal to the father,
Let him be of one mind with the mother
Let the wife speak sweet.
Gentle words to her husband.
Let not brother hate brother,
Nor sister hate sister
Let our water-store be common
And common our share of food.
May we be unanimous
And united in purpose,
Speak with each other in friendly manner
May we have common wish and common aim.
May we meet with a loving heart,
Every morning and every evening.
May we be of one mind, follow one leader.
Like Devas who preserve immortality.

A CLASSIC PERFORMER

—GARGI KAUL

Music is the greatest love of his life, his sole ambition to be known and respected for music and his. devotion unmatched. At the age of 28, Dhananjay Kaul has made a mark in the world of classical music.

His achievements do not come in as a surprise considering the fact that his training in music began almost as soon as he could talk. And by the age of seven, when kids his age were busy mastering the techniques of cricket and hopscotch, he was conversant with the most of the nuances of music. He gave his first stage performance at the age of nine and passed the radio audition at the age of 12.

Born in Safapur on the outskrits of Srinagar (Kashmir), Dhananjay received early tutoring in music from his father Shanti Kaul. Later he received training from Santoor maestro Bhajan Sopori, who helped him with light classical Hindustani music, composition and voice modulation. He also enjoyed a brief patronage from Acharya Nirmala Arun of Patiala gharana. "I learnt a great deal from her about the finer points of Panjabi gayaki," says Dhananjay.

"Though all these people have helped me a lot in understanding music yet 60 per cent of my knowledge of music is the result of self learning. I have learnt a lot through studying and listening to renowned musicians", he adds. Dhananjay feels that music is simply a subject and like any other subject is open for anybody who is interested.

Displaying a rebel streak, Dhananjay adds, "gone are lhe times when music was kept under folds and considered the domain of the few and budding artists would consider themselves lucky if taken into patronage by renowned singers. Now everything is out in the open and dedication is the keyword."

One thing Dhananjay is not lacking is in dedication. For over 20 years now he has been associated with music. He specialises in Punjab and Kirana gharana style and has a strong influence of Kashmiri sofiana music.

Talking about his style, the singer from Kashmir says that he does not want to be bracketed in a particular style. "I want to experiment with different styles. That is why I'am highly influenced by the 'Nirguni' genre as propogated by Kumar Gandharva." This non-conformation to a particular style keeps an artist alive and vocally 'on the move'.

At the moment Dhananjay is experimenting with sofiana mousiqui (music). "There has always been a step-motherly treatment towards Kashmiri music. Sofiana is as rag-based as any other folk music. I want to use the sofiana musical phrases in the Hindustani genre and prove that they are equally good," he adds confidently. Apart from this he also sings thumri, dadra, bhajan and gazal and has a special passion for khayal and Punjabi kafi.

Commenting on the current musical trends, Dhananjay adds that the singers nowadays are looking for shortcut ways to fame and are more interested in cultivating godfathers. With the result they end up being one time wonders. Most of the singers focus on their voice rather than on acquiring the knowledge of music. Their sole aim being to feed the microphone sather than reaching out and communicating with the masses.

(Courtesy : "The Hindustan Times")

Killings and Atrocities by Muslim Terrorists in Jammu and Kashmir

[Reproduced below are the facts and figures of killings and other atrocities committed by Terrorists and fundamentalists in the State of Jammu and Kashmir from 16.6.86 upto 15.2.94. The figures have been provided through the courtesy of Shri B. N. Bhan "Nissar", Editor, "Kashyapwani."

—Editor]

CIVILIANS

Particulars		Killings	Critically wounded	Wounded	Kidnapped	Raped	Missing
Muslims		5,181	1,497	1,459	193	14,971	139
Hindus	K.Ps.	738	90	—	17	17	16
	Non K.Ps.	303	419	48	27	17	15
	Non-State Subjects	70	7	1	5	2	2
Sikhs		226	36	1	59	86	44

SECURITY FORCES

Particulars	Killings	Critically wounded	Wounded	Kidnapped	Raped	Missing
Army & IAF	71	296	21	1	—	—
BSF	748	880	101	3	1	3
CRPF	674	504	90	3	—	3
ITBP/CISF	6	9	1	2	—	2
BRO/GREF	7	3	—	18	—	1
JKP etc.	274	268	62	35	1	31
CBI/CI/IB	36	1	1	2	—	—
Foreigners	1	—	—	—	—	—

Private property burnt and damaged.

Burnt	Hindu owned	Owned by other communities	
Houses	6052	753	
Buildings	13	6	
Shops	199	377	
Temples	40	—	
Mosques	—	6	2 Ahmadi, 2 Shite, 2 Snnni
Sheds/Kothars	2826	964	
Gurudwaras	—	1	
Factories	—	2	
Damaged			
Houses	1006 + 1 (Buddhist)	95	
Kothars	136	18	
Temples	3	—	
Mosques	—	5	2 Ahmadi, 3 Shiite
Shops	10	10	
Looted			
Houses	9885	269	
Shops	28	13	
Kothars	57	8	
Temples	8	—	
Ziarats	—	1	
Desecrated			
Temples	18	—	
Mosques	—	6	1 Ahmadi, 1 Shiite, 4 Sunni

Death and disappearance of Kashmiri Pandits since dislocation.

In Jammu Division	3187
Outside the State	256
Accidental	40
Suicidal	46
Snake bites	20
Sun stroke	23
Drowning	7
Murder	9
Missing	29

Total snake bite and heat stroke cases reported.

Snake bite	58
Heat stroke	89

—News Editor

Protest Rally of All Displaced Kashmiri Employees Forum

(Report by K. Samachar Correspondant, R. Hangloo)

The Govt's failure to look into the demands of displaced Kashmiri Employees for last five years has generated a lot of resentment among the Displaced Employees Community, forcing them to hold a protest rally on Jan. 9, 1995. Though All Displaced Kashmiri Employees Forum intimated the authorities time and again and approached even national Human Rights Commission to voice their distress and redressal of their grievances, yet it was all in vain. After the mass exodus from Valley in 1989-90 due to Pak sponsored terrorism, the Govt. issued an order vide No. 105 GR/ER/REV 1990 dated 11.5.90 for cash assistance in favour of displaced employees, but the same was withdrawn under pressure from some quarters within 4 days. Though free ration was approved and provided to the displaced employees during early 1990 it was discontinued later on.

Instead of providing some help to them a deaf ear was given to their justified claims. Fedup with the Government attitude the Displaced Employees organised a protest rally on Jan. 9 to highlight their demands and voice their resentment against the blatant silence and apathetic approach. The rally which started from Rajinder Park was a follow up of month long silent protest by wearing black badges. Undeterred by the rough weather conditions a protest march was taken which culminated at Relief Commissioner's office.

The Forum President Mr. M. K. Tikko in his concluding speech at Relief Commissioner's office warned govt. for its "Criminal Silence" towards the genuine demands of the displaced employees. He termed the Government's attitude towards the displaced employees, a conspiracy to anihilate them. Mr. Tikoo urged the employees to maintain unity among their rank and file to fight menace of aparthied and bureaucratic attitude. He appealed to the employees to be ready, for the March to National Capital. The Employees Forum presented a memorandum highlighting their various demands addressed to Governor Gen. K. V. Krishna Rao to Relief Commissioner which included :

1. Treating entire period of displacement as on duty.
2. Paying house rent allowance and city compensatory allowance granted to state Government Employees vide SRO76 dated 30.3.92.
3. Opening promotional avenues and providing other benefits.
4. Providing Govt. accommodation, dislocation allowance, free Ration.

4. Utilisation of services of Displaced Employees.

6. Stopping victimisation of the displaced Employees with regularisation of diplaced work charge employees and providing Daily wage allowance.

7. Mitigating the problems of displaced students.

8. Providing jobs to displaced youth.

9. Provide Regular payment of salaries and sustenance allowance.

Among other speakers the organiser of the Forum Mr. V. M. Tutoo and Gen. Secretary Mr. V. K. Kashkari also spoke on the occasion, Elaborating the need for holding the rally Mr. Tutoo, the Forum Organiser alleged that Govt.'s failure to treat the displaced employees at par with other State Employees has been the reason of this demonstration.

Holding Govt. responsible for its indifferent attitude towards the displaced Employees Forum, General Secretary Mr. Kashkari alleged that the present policy of State Govt. was a slow poisoning of the Displaced Employees and programmes of the Forum.

The Forum approached the State and Central Govt. and even the Hon'ble Prime Minister P. V. Narsimha Rao, who directed Cabinet Secretary to look into the demands and help them out but nothing substantial materialised so far. Elaborating his point he said that Govt. policies of destroying the ability of Displaced Employees by making them idle resulted in many diseases and disorders.

A meeting and open discussion with National Human Rights Commission and the State Chief Secretary did not also prove beneficial despite the Commissioner's assurance to settle the demands within one month from Aug. 94, said Mr. Kashkari. He added, "We are forced to put our problems before International Commission on Refugees".

AIKS ADVISORY-CUM-ACTION COMMITTEE

All India Kashmiri Samaj has framed an advisory-cum-action committee in Jammn to provide assistance and help to economically weaker sections of the displaced K. P. Baradari for marriage of daughters and medical aid. Shri Triloki Nath Khosa, President, Kashmiri Pandit Sabha, Jammu has been nominated as Convenor of the Committee. The other members of the Committee are Shri Amar Nath Vaishnavi, Shri H. N. Jattu, Gen. B. N. Dhar, Shri M. L. Aima, Smt. Krishna Wuthu and Shri K. K. Mam.

RESH VAR

All India Kashmiri Samaj is organizing and sponsoring a Kashmiri play Resh Var (Abode of saints) to be staged on 18th and 19th Feb. 1995 at Kamani Auditorium, New Delhi. The stage play is based on the message of universal love preached by Lal Ded and Nund Reosh. The play is aimed at re-awakening this sentiment and reconstructing that value.

HOLOCAUST DAY

The Holocaust Day was observed by various KP Organizations on 19th January, 1995. Panun Kashmir organized a function at Udhampur which was addressed among others by Dr. Ajay Chrungoo, Shri K. N. Kaul (of Indo-American Kashmir Forum), Shri Kuldeep Raina and Mrs. Rama Shah.

Kashmiri Samiti, Delhi observed the day at Jantar Mantar, New Delhi on 20th

January. The rally was addressed by Shri Kidar Nath Sahni, Shri K. K. Kaul, Shri C. L. Gadoo, Shri H. N. Jattu, Shri H. N. Nehru and others.

ANNUAL FUNCTION ON VISHWA BHARATI SCHOOL

Vishwa Bharati Public Shool Akalpur More, Muthi, Jammu celebrated its Annual Day Function and Prize Distribution day on 3rd February 1995 at its Campus. Professor M. R. Puri former Vice-Chancellor of Jammu University was the Chief Guest. Welcoming the Guests Sh. K. N. Kaul (Dembi) President, Vishwa Bharati, womens welfare Institution gave a detailed history of the Institution when it was started at Rainawari, Srinagar in 1953. He described the working of the various Units of Vishwa Bharati viz. School and College at Rainawari Srinagar, School ond College of Education at Jammu, Public School at NOIDA, Ghaziabad, U.P. and the proposed School at Dwarikapuri, Delhi.

Prof. M. R. Puri apreciated the efforts of the management and the Institution as a whole for propagating the cause of education. The school children presented a Cultural Programme, Mass P.T. and Folk Songs of the region which was highly appreciated by the audience. About two thousand people attended the function.

Prof. Dulari Kaul, Principal of the School described the working of the school in the school report and proposed vote of thanks.

HONOURED

Late Bansi Parimoo, a renowned artist from Kashmir has been posthumously awarded a Gold Medal by the Govt. of Jammu and Kashmir in recognition of his enormous contribution to the world of art. The award was announced on the eve of the Republic Day.

STRIKE BY THE STUDENTS OF THE CAMP COLLEGES

The displaced students studying in camp colleges have been on strike for over three weeks in protest against the apathy of the authorities towards their genuine problems. They were promised by the erstwhile Vice-Chancellor of the Kashmir University and Commissioner-Secretary Education to allow them a carry over system, since they have to wait for a long time for their examinations. This promise has not been honoured.

A Correction

In our December, 1994 Issue, it has been mentioned that a mass yageopavit was organised for 20 young boys at Barnai by Swami Natraj Nanda Saraswati.. Actually the yageopavit was for only 18 boys and was not held at Barnai but at Durganagar. The error is regretted. **—News Editor**

पञ्चांग दर्पण

मार्च	फाग॰		
1	17	अमावस्या	बुध.
2	18	प्रतिपदा	गुरु.
3	19	द्वितीया	शुक्र.
4	20	तृतीया	शनि.
5	21	चतुर्थी	रवि.
6	22	पंचमी	सोम.
7	23	षष्टी	मंगल.
8	24	सप्तमी	बुध.
9	25	अष्टमी	तैलाष्टमी गुरु
10	26	नवमी	शुक्र.
11	27	दशमी	शनि.
12	28	दशमी	रवि.
13	29	एकादशी	सोम. मासान्त

मार्च	चैत्र		
14	1	मंगलवार	द्वादशी
15	2	बुधवार	संक्रान्ति त्रयो
16	3	गुरुवार	चतुर्दशी चतु.
17	4	शुक्रवार	पूर्णिमा होली
18	5	शनिवार	चैत्र कृ. द्वितीया
19	6	रविवार	तृतीया
20	7	सोमवार	चतुर्थी
21	8	मंगलवार	पंचमी
22	9	बुधवार	षष्टी
23	10	गुरुवार	सप्तमी
4	11	शुक्रवार	अष्टमी
25	12	शनिवार	नवमी
26	13	रविवार	दशमी
27	14	सोमवार	एकादशी
28	15	मंगलवार	द्वादशी
29	16	बुधवार	त्रयोदशी
30	17	गुरुवार	चतुर्दशी
31	18	शुक्रवार	अमावस